



04 - मध्यप्रदेश : आज सात मई को नौ का फैसला!



05 - मीडिया की स्वतंत्रता : सारे धान पंसेरी के भाव मत तौलिये

A Daily News Magazine

मोपाल
मंगलवार, 07 मई, 2024



06- थम गया चुनौती शोर, आज ईवीएम में बंद होगा प्रत्याशियों के भाग्य का...



07- तीसरी बार मोदी जी के आगमन पर ऐतिहासिक धारनगरी...

मोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 239 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रु.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./मोपाल/4-391/2018-20)

हम सब

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsaverenews
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

हम सभी के बीच मौजूद रहता है
एक पुराना घर,
जो दिखता है अक्सर सपनों में,
जिसके सामने से गुजरने की
इच्छा होती है कई बार,
यह जानते हुए भी कि
अब वह मुहल्ला वैसा नहीं रहा
वहां अब वह घर भी नहीं है
मगर उस गली से गुजरने की
तमन्ना रहती है हर बार
हमारे बीच मौजूद रहता है
उस घर का
हर एक अक्स,
मौजूद रहता है कोई कोना
जहां बैठकर सीखी थी
ज़िन्दगी की बारहखड़ी,
हमारे बीच मौजूद रहती है
वहां लिखी कोई कविता।

घर बदलते रहते हैं,
बड़े और बड़े होते जाते हैं
घर के कोने बनते रहते हैं नित नए
कविताएं भी लिखी जाती हैं
कई – कई
मगर हर बार लौटकर
सामने आता है
वही घर,
वही कोना,
वही कविता।

– आशीष दशोत्तर

प्रसंगवश

मोनीदीपा बनर्जी

जब तक दिल्ली भाजपा के नेता बंगाली में सिर्फ सांकेतिक शब्दों से आगे बोलना नहीं सीख जाते और बंगाली लोकाचार, संवेदनशीलता और हास्य की समझ विकसित नहीं करते, मैं पार्टी को इस राज्य में कोई खास प्रभाव डालते नहीं देख पाऊंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'दीदी ओ दीदी' टिप्पणी भाषा से परे चली गई और भाजपा के लिए नकारात्मक साबित हुई। हालांकि, राष्ट्रीय भाजपा नेताओं द्वारा की गई अन्य टिप्पणियां बंगाल के लोगों के लिए अनुवाद में खो जाती हैं। 'घुसपैटिय' या 'तुष्टीकरण' जैसे शब्द यहां बहुत कम सुनाई देते हैं, न ही 'मंगलसूत्र' या अमित शाह की नवीनतम 'मुल्ला, मद्रसा, माफिया' लाइन जैसे वाक्य, जो ममता बनर्जी के हस्ताक्षर 'मां, माटी, मानुष' नारे का बिगड़ा हुआ रूप है। बंगाल में इस्लामी शिक्षकों या धार्मिक नेताओं के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द 'इमाम' है, मद्रसों को वैध शैक्षणिक संस्थान की मान्यता प्राप्त है और जबकि 'माफिया' अंग्रेजी शब्द है, यह स्थानीय राजनीतिक भाषा का हिस्सा नहीं है। भाजपा नेताओं द्वारा प्रयुक्त हिंदी शब्द बंगाली संदर्भ में उतना महत्व या अर्थ नहीं रखते। चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं, बंगाली उत्तर भारत की मुख्यधारा से अलग हैं और अगर भाजपा वाकई बंगाल से 272 सीटों का आंकड़ा पार करना चाहती है, तो '400 पार' की बात तो दूर, पार्टी को अपनी रणनीति का भी फिर से मूल्यांकन करना पड़ेगा। अभी भी वक्त है. 2024 के चुनाव में पांच चरण बाकी हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि मुख्यमंत्री बनर्जी सुनिश्चित करती हैं कि वे बातचीत को स्थानीय भाषा में

पश्चिम बंगाल में भाजपा को बंगाली बनने की जरूरत है

करें। बजाय घुसपैटिय और तुष्टीकरण जैसे शब्दों का इस्तेमाल करने के, वे मंगलसूत्र की तुलना में स्कूल जाँब घोटाले के बारे में अधिक आसानी से बात करेंगी। वे घरों और नरेंगा के पैसे के बारे में बात करेंगी, जिसके लिए वे भाजपा पर बंगाल के लोगों को बंचित करने का आरोप लगाती हैं। भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) द्वारा साझा किए गए वोट प्रतिशत में अंतर पर विवाद कुछ ऐसा है जिसके बारे में वे बात करेंगी, लेकिन मुझे संदेह है कि कर्नाटक के प्रज्वल रेवन्ना कभी यहां राजनीतिक चर्चा में शामिल होंगे। वे इस मुद्दे को नहीं उठाएंगी क्योंकि इससे लोगों को संदेशखाली की याद आ जाएगी, लेकिन इसके अलावा भी, यौन उत्पीड़न बंगाल में बातचीत का विषय नहीं है। लेकिन मैं शायद बहुत जल्दी बोल रही हूँ. अब सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस पर छेड़छाड़ का आरोप किस तरह से सामने आता है। राजभवन की एक कर्मचारी ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कराई है. राज्यपाल ने इस आरोप को 'मनगढ़त कहानी' बताकर खारिज किया है और कहा है कि शायद कोई उन्हें बदनाम करके 'चुनावी लाभ' लेने की कोशिश कर रहा है। लेकिन ऊपर निकाले गए निष्कर्ष अचानक नहीं हैं। वे आंशिक रूप से कोलकाता में प्रतीची संस्थान के राष्ट्रीय शोध समन्वयक साबिर अहमद के विश्लेषण पर आधारित हैं, जिसके अध्यक्ष अमर्य सेन हैं। अहमद ने बंगाल में चार पार्टियों—टीएमसी, भाजपा, कांग्रेस और सीपीआई (एम) के 2024 के चुनाव घोषणापत्र का अध्ययन किया। उनके विश्लेषण से यह बात सामने आई: टीएमसी ने 'महिला', 'शिक्षा' और 'स्वास्थ्य' शब्दों का सबसे ज्यादा बार जिक्र किया है, बीजेपी,

कांग्रेस या सीपीआई (एम) से भी ज्यादा बार। बीजेपी के घोषणापत्र में 'महिला', 'नौकरी' और 'ग्रामीण' का जिक्र सबसे कम बार किया गया है। कांग्रेस के घोषणापत्र में 'अल्पसंख्यक', 'नौकरी' और 'गरीब' का जिक्र सबसे ऊपर है। सीपीआई (एम) के घोषणापत्र में 'भ्रष्टाचार' शब्द का सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया गया है। सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों की तुलना करने पर एक तथ्य सामने आता है: भाजपा के विकल्प सबसे ज्यादा पूर्वानुमानित हैं. वे हैं 'भारत', 'स्लोबल', 'पीएम', 'गारंटी' और 'विस्तार।' विश्लेषण में भाजपा के घोषणापत्र में संस्कृतिनिष्ठ शब्दों को भी सूचीबद्ध किया गया है जिन्हें बंगाल के लिए विदेशी माना जाता है। समस्या को ठीक करने के लिए भाजपा को दो कदम उठाने चाहिए। पहला है स्थानीय नेतृत्व को सशक्त बनाना और उन्हें चुनावी मौसम में एजेंडा तय करने का अधिकार देना। पार्टी ने 2021 से सबक लिया है। विधानसभा चुनाव से पहले, यह सामने आया था कि स्थानीय नेतृत्व को दरकिनार किया गया, जबकि बंगाल से बाहर के नेता, जिन्होंने कोलकाता में डेरा जमा लिया था, चर्चा में छापे हुए थे। सबसे ज्यादा दिखाई देने वाले नेताओं में कैलाश विजयवर्गीय, अरविंद मेनन, बाबुल सुप्रियो (अब टीएमसी में), साथ ही भूपेंद्र यादव, धर्मेन्द्र प्रधान और हिमंत बिस्वा सरमा शामिल थे। दिल्ली घेरे जैसे स्थानीय नेता, जो उस समय राज्य में भाजपा इकाई के अध्यक्ष थे और 2019 में 18 सीटों पर जीत के सूत्रधार थे, पार्टी से बाहर हो गए और दबाव में थे। सुवेंदु अधिकारी अभी-अभी पार्टी में शामिल हुए थे। इसलिए, 'बाहरी लोगों' का बोलबाला

था। बंगाल की राजनीतिक संस्कृति और लोकाचार से अलग, चर्चा में उनका दबदबा विफल रहा और वे अमित शाह के '200 पार' के लक्ष्य को पूरा करने में विफल रहे। इस बार कोलकाता आने वाले भाजपा पर्यवेक्षक लगभग अदृश्य हैं और यह जानबूझकर लिया गया फैसला था। बेशक, बड़े-बड़े नेता आते-जाते रहते हैं, लेकिन कोलकाता में तैनात और तार खींचने वाले पर्यवेक्षकों को रखार से दूर रहने की सलाह दी गई है। टीम में सुनील बंसल, मंगल पांडे, अर्का लाकड़ा और अमित मालवीय शामिल हैं. आखिरी वाले केवल एक्स पर हैं। सुवेंदु अधिकारी को प्रमुख भूमिका दी गई है और उनकी कम से कम 30 सिफारिशों किए गए उम्मीदवारों को स्वीकार किया गया। गुटबाजी की खबरों के बीच, भाजपा के मौजूदा राज्य अध्यक्ष सुकांत मजूमदार अपनी जगह और शांति बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। यह सब बहुत अच्छा है, लेकिन राज्य में आने-जाने वाले राष्ट्रीय भाजपा नेताओं के लिए बंगाली में क़ैश कोर्स करना अच्छा रहेगा – वास्तव में बंगाली की सभी चीजें, रसगुल्ला और अमी तोमाके भालोबाशी जैसी रूढ़ियों से परे हैं। इसमें होदोल कुटकुट जैसे शब्द सीखना और सत्यजीत रे के पिता सुकुमार रे की बकवास कविताओं की बेहतरीन किताब अबोल-ताबोल का थोड़ा सा हिस्सा शामिल है। अच्छे उपाय के तौर पर, खासतौर पर इस गर्मी में कुछ लोका भाजा और आलू भोर्ता के साथ पानाभात का थोड़ा सा हिस्सा भाजपा को बंगाली बनाने और बंगाल जीतने का मौका देने में काफी मददगार साबित हो सकता है। (दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आज तीसरे चरण की वोटिंग: मतदान केंद्रों में पहुंचे दल, अब तक 1433 एफआईआर

सीईओ अनुपम राजन बोले, भिंड-मुरैना सर्वाधिक संवेदनशील, सभी पोलिंग में वेबकास्टिंग

भोपाल (नप्र)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए चुनावी शोर थमने तक प्रदेश में 1433 एफआईआर दर्ज की जा चुकी हैं। इसमें कांग्रेस और बीजेपी दोनों ही दलों के नेता भी शामिल हैं। इसके अलावा आचार सहिता का उल्लंघन करने वाले लोगों पर भी एफआईआर दर्ज कराई गई है। मंगलवार को होने वाले मतदान के लिए ग्वालियर चंबल संभाग के जिलों खासतौर पर मुरैना और भिंड के शत प्रतिशत मतदान केंद्रों पर वेबकास्टिंग के जरिये चुनाव आयोग मतदान पर नजर रखेगा। यहां हर चुनाव में होने वाली हिंसा के मद्देनजर सुरक्षा प्रबंधों पर भी खासा फोकस किया गया है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) अनुपम

राजन ने पत्रकारों से चर्चा में यह जानकारी देते हुए कहा कि प्रदेश में 20456 मतदान केंद्र बनाए गए हैं जिसमें से 16011 मतदान केंद्रों में वेबकास्टिंग कराई जा रही है जो कुल मतदान केंद्रों का अस्सी प्रतिशत है। इसके पहले दो चरणों के चुनाव में मतदान केंद्रों की वेबकास्टिंग का प्रतिशत 65 से 70 प्रतिशत तक ही रहा है पर इस बार 80 प्रतिशत तक मतदान केंद्रों को इससे कवर किया गया है। इन मतदान केंद्रों पर छाया और गर्मी व लु से बचाव के इंतजाम भी किए गए हैं ताकि लोगों को गर्मी के कारण परेशानी न हो। लाइन लंबी होने की स्थिति में छायादार स्थानों पर बैठने की भी व्यवस्था कलेक्टरों ने की है ताकि लोग वोट डालने में पीछे न हटें।



राजस्थान-छत्तीसगढ़ नीट के गलत पेपर बंटे, लीक का आरोप

एनटीए बोला- कुछ बच्चे समय से पहले सेंटर से भागे, बिहार से 9 सॉल्वर अरेस्ट



नई दिल्ली/जयपुर/रायपुर (एजेंसी)। राजस्थान के सर्वाई माधोपुर के बालिका उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर मानटौन में नीट के पेपर के दौरान हेमामा हो गया था। सोशल मीडिया पर स्टूडेंट्स और कुछ पॉलिटीशियन ने नीट यूजी एग्जाम का पेपर लीक होने का आरोप लगाया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी ट्वीट करके इसके लिए सरकार को जिम्मेदार बताया। इन सबके बीच परीक्षा करने वाली संस्थान नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने कहा- पेपर लीक होने के आरोप गलत है। **एनटीए ने कहा- गलत पर्चा बंटा था, जिसे लेकर छात्र भागे थे-** एनटीए की सीनियर डायरेक्टर साधना पराशर ने बताया- सर्वाई माधोपुर के गलर्स हायर सेकेण्डरी मॉडल स्कूल में गलत क्वेश्चन पेपर बांट दिया गया था।



स्टूडेंट्स एग्जाम सेंटर से पेपर लेकर भाग गए। इनमें से ही किसी ने पेपर वायरल किया होगा। हालांकि तब तक पेपर शुरू हो चुका था, इसलिए

परिजन बोले-

● बच्चों के भविष्य का क्या होगा ?

एग्जाम देने आई हिंदी मीडियम की छात्रा करीना ने रोते हुए बताया कि हम हिंदी मीडियम वाले स्टूडेंट्स को इंग्लिश मीडियम का पेपर दे दिया। विरोध करने मारपीट भी की गई। एग्जाम देने आए और भी स्टूडेंट्स ने बताया कि हमें इंग्लिश मीडियम का पेपर दे दिया और जब विरोध किया तो हमसे पेपर ले लिया गया। फिर 20 मिनट बाद वापस वो ही पेपर दे दिया और कहा गया कि यही पेपर करना पड़ेगा। परिजनों ने बताया कि बच्चों को पेपर देने में तो गड़बड़ी की ही, साथ ही बच्चों को पीटा भी गया। सूचना के बाद पुलिस और प्रशासन के आलाधिकारी मौके पर पहुंचे।

इसे पेपर लीक नहीं माना जाएगा। इस गड़बड़ी के कारण 120 लड़कियां प्रभावित हुई हैं, जिनके लिए एनटीए जरूरी कदम उठा रहा है।

बिहार में 9 सॉल्वर अरेस्ट

बिहार में नीट की परीक्षा में सॉल्वर गैंग के 9 लोग गिरफ्तार हुए हैं। ये दूसरे के बदले परीक्षा दे रहे थे। पटना पुलिस ने 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें 3 मेडिकल स्टूडेंट हैं। वहीं पूर्णिया से भी 4 लोगों की गिरफ्तारी हुई है।

शहीद विकी पहाड़े को गार्ड ऑफ ऑनर से अंतिम विदाई

छिंदवाड़ा (नप्र)। जम्मू कश्मीर के पुंछ में आतंकी हमले में शहीद हुए एयरफोर्स के जवान विकी पहाड़े का अंतिम संस्कार छिंदवाड़ा के पातालेश्वर मोक्षधाम में किया गया। मुखाम्म शहीद के 5 साल के बेटे हार्दिक ने दी। इससे पहले, एयरफोर्स ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया। सेना के हेलिकॉप्टर से उनका पार्थिव शरीर नागपुर से सुबह 10.30 बजे इमलीखेड़ा हवाई पट्टी (छिंदवाड़ा) लाया गया। गार्ड ऑफ ऑनर देने के बाद विशेष वाहन से पार्थिव शरीर को परसिया रोड से उनके गृह ग्राम नोरिया करबल ले जाया गया। नोरिया करबल से अंतिम यात्रा पातालेश्वर मोक्षधाम पहुंची। यहां रिश्तेदार ने बेटे को गोद में लेकर विधि-विधान से अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूरी कराई। इससे पहले छिंदवाड़ा में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित की।



उन्होंने उनकी मां दुलारी से भी मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने कहा, हमें अपने बहादुर जवान और सेना पर गर्व है। जिन्होंने यह कायराना हरकत की, उन्हें कीमत चुकाना पड़ेगी।

परिवार को एक करोड़ की मिलेगी सहायता राशि

सीएम डॉ. मोहन यादव ने एएसआई महेंद्र बागरी के परिवार को एक करोड़ की सहायता राशि देने की बात कही है। साथ ही परिवार के सदस्य को नौकरी भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रस्ताव को मंजूरी के लिए चुनाव आयोग को भेजेगी। पति की शहादत पर पत्नी रीना पहाड़े ने कहा, मुझे गर्व है...। वे 5 साल के बेटे हार्दिक को गोद में लिए हुए थीं, इतना कहकर उनके आंसू नहीं रुके। सब इम्पेक्टर बहन गीता ने कहा, मुझे भाई पर गर्व है। पुंछ में 4 मई की शाम एयरफोर्स के जवानों पर आतंकी हमला हुआ था। 5 जवान घायल हुए थे। सभी को एयरलिफ्ट कर उधमपुर के अस्पताल में भर्ती कराया गया था। 4 मई की देर रात विकी पहाड़े का निधन हो गया था। उनके पार्थिव शरीर को रविवार रात 7.30 बजे जम्मू एयरपोर्ट से विशेष विमान के जरिए नागपुर एयरपोर्ट लाया गया था।

झारखंड में ईडी की कार्रवाई पर ओडिशा में बोले पीएम मोदी

पड़ोसी राज्य में नोटों का पहाड़ मिल रहा

नबरंगपुर (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय की ओर से झारखंड में भारी मात्रा में नकद जब्त किए जाने का जिक्र पीएम नरेंद्र मोदी ने ओडिशा में एक चुनावी रैली में की। ओडिशा के नबरंगपुर में एक चुनावी सभा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि केंद्रीय एजेंसी की कार्रवाई की कुछ लोग सराहना कर रहे हैं तो कुछ लोग इस भ्रष्टाचार और लूट को रोकने की आलोचना कर रहे हैं। पीएम ने कहा, आज, पड़ोसी राज्य झारखंड में नोटों का पहाड़ मिला है। लोग कह रहे हैं कि चोरी हो गया और माल पकड़ रहा मोदी वहां। अब आप ही बताइए, यदि मैं उनकी चोरी रोकूंगा, उनकी आमदनी बंद कर दूंगा, उनकी लूट बंद कर दूंगा तो वे मोदी को गाली देंगे नहीं देंगे तो और क्या करेंगे। पीएम ने चुनावी सभा में कहा, क्या गालियों के बावजूद मुझे यह काम नहीं करना चाहिए? क्या मुझे आपके पैसों की रक्षा नहीं करनी चाहिए। पीएम ने यह प्रतिक्रिया सोमवार को ईडी की ओर से झारखंड की राजधानी रांची में की गई बड़ी कार्रवाई के बाद दी है। सोमवार को केंद्रीय एजेंसी ने झारखंड के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगौर आलम के निजी सचिव संजीव लाल के घरेलू सहायक के आवास से 20 करोड़ रुपये जब्त किए। सोमवार की सुबह रांची में कई ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने छापेमारी की।

कांग्रेस ने अशोक गहलोत और भूपेश

बघेल को रायबरेली-अमेठी का सीनियर

ऑब्जर्वर बनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने रायबरेली और अमेठी लोकसभा सीट के लिए सीनियर ऑब्जर्वर की नियुक्ति की है। इसके लिए राजस्थान के पूर्व सीएम अशोक गहलोत और छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल को चुना गया है। गांधी परिवार की परंपरागत सीट रायबरेली से इस बार राहुल गांधी चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं, अमेठी से पार्टी ने किशोरी लाल शर्मा को टिकट दिया है। सीनियर ऑब्जर्वर बनाए गए भूपेश बघेल भी छत्तीसगढ़ राज्य की राजनंदावां लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। **सोशल मीडिया पोस्ट पर नड्डा, अमित मालवीय और विजयेंद्र के खिलाफ एफआईआर दर्ज-** भाजपा के नेशनल प्रेसिडेंट जेपी नड्डा, आईटी सेल के हेड अमित मालवीय और कर्नाटक बीजेपी के प्रेसिडेंट की वाई विजयेंद्र के खिलाफ कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेट्री ने एफआईआर दर्ज कराई है। सभी पर सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए विशेष उम्मीदवार को वोट नहीं देने के लिए एससी और एसटी वोटर्स को भड़काने का आरोप है।



दिल्ली में खौफनाक वारदात, सरेआम चाकू से रेता गला, मरने के बाद भी छलनी करते रहे लाश

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के जाफराबाद इलाके में रविवार शाम एक युवक की चाकू से गला रेतकर हत्या का मामला सामने आया है। मृतक की पहचान 35 वर्षीय नाजिर इलियास उर्फ नन्ने के रूप में हुई है। वारदात के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। इसके बाद सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस को नाजिर मृत हालत में मिला जहां से उसके शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल की मोर्चों में रखवा दिया गया। स्थानीय पुलिस के अलावा क्राइम और एफएसएल की टीमें ने खून के धब्बों इत्यादि समेत मौके से जरूरी सुराग जुटाए हैं। फिलहाल पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज व स्थानीय लोगों से पूछताछ की मदद से आरोपियों की पहचान का प्रयास कर रही है। शुरुआती जांच में पुलिस ने आपसी रंजिश के चलते हत्या की आशंका जताई है। यह भी पता चला है कि नाजिर व उसके तीन भाई इलाके के घोषित बदमाश हैं। ऐसे में रंजिशन हत्या की आशंका और बढ़ जाती है। फिलहाल पुलिस मृतक के परिजनों से पूछताछ करते हुए मामले की हर कोण से जांच कर रही है। बताया जा रहा है कि नाजिर खुद अपने एक भाई की हत्या के मामले में गवाह भी था। मिली जानकारी के मुताबिक, नाजिर परिवार के साथ चौहान बांगर, अखाड़े वाली गली में रहता था। इसके परिवार में पांच भाइयों के अलावा अन्य सदस्य हैं। नाजिर के तीन भाई इलाके के घोषित बदमाश हैं। रविवार शाम करीब 06.45 बजे नाजिर स्कूटी से अपने घर से करीब 250 मीटर दूर स्थित मंगला अस्पताल वाली गली में पहुंचा था।

चुनाव जीतीं तो फिल्म इंडस्ट्री छोड़ देंगी कंगना रनोट

मंडी (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनोट लोकसभा चुनाव की टिकट मिलने के बाद से ही सुर्खियों में बनी हुई हैं। अब कंगना ने खुद ये ऐलान कर दिया है कि अगर वो मंडी से चुनाव जीत जाती हैं तो

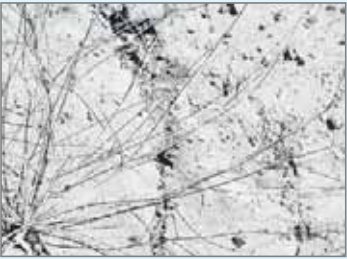


फिल्मों में काम करना हमेशा के लिए बंद कर देंगी। हालांती में कंगना रनोट एक चुनावी रैली का हिस्सा बनी थीं। रैली के बाद कंगना रनोट ने आज तक के सवाल पर कहा है, मैं फिल्मों में भी पक जाती हूं, मैं रोल भी करती हूं और फिल्मों का निर्देशन भी करती हूं। अगर मुझे राजनीति में संभावना दिखती है कि लोग मुझसे जुड़ रहे हैं तो फिर मैं राजनीति ही करूंगी।

बाड़मेर में अचानक धंस गई जमीन

● 2 किमी लंबे इलाके में आई दरार, छोटे-बड़े गड़बड़े हुए

बाड़मेर (एजेंसी)। बीकानेर के बाद अब बाड़मेर में करीब 2 किलोमीटर लंबे क्षेत्र में जमीन धंसने से दरार आ गई है। मामला जिले के नागाणा में वरूड ऑयल प्रोडक्शन इलाके का है। यहां मंगला प्रोसेसिंग टर्मिनल के वेल पैड (तेल के कुएं) नंबर 3 से 7 के बीच धंसी जमीन और दरार देखकर लोग हैरान रह गए। जिला प्रशासन, कूड ऑयल कंपनी केयर्न



ऑयल एंड गैस, वेदांता लिमिटेड और पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं। जिला कलेक्टर निशांत जैन का कहना है कि टीमें मौके पर जांच कर रही हैं। जानकारी के अनुसार नागाणा इलाके में कूड ऑयल प्रोडक्शन का काम 15 साल से चल रहा है। कंपनी के अलग-अलग वेल पैड बने हुए हैं। सोमवार सुबह ग्रामीण वेल पैड नंबर 3 के नजदीक से निकल रहे थे। इस दौरान उन्होंने उसके पास धंसी जमीन, गड़बड़े और दरार देखने पर प्रशासन को सूचना दी।

केजरीवाल ने क्या आतंकी संगठन से लिए 16 मिलियन डॉलर एलजी ने की एनआईए जांच की सिफारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल के खिलाफ एनआईए जांच की सिफारिश की है। उन्होंने कहा है कि केजरीवाल ने बैन किए गए आतंकी संगठन 'सिख फॉर जस्टिस' से पॉलिटिकल फंडिंग ली है।

एलजी के पास वर्ल्ड हिंदू फेडरेशन के राष्ट्रीय महासचिव आशू मोंगिया की शिकायत आई थी, जिसमें कहा गया था कि अरविंद केजरीवाल की पार्टी आप ने 2014 से 2022 के बीच खालिस्तानी आतंकी समूहों से 1.6 करोड़ डॉलर यानी 133 करोड़ रुपए लिए थे, ताकि देवेन्द्र पाल भुल्लर की रिहाई कराई जा सके। इस शिकायत के आधार पर एलजी ने यह सिफारिश की है।



एलजी ऑफिस की तरफ से गृह मंत्रालय के नाम लिखा गया लेटर... शिकायत में दावा- केजरीवाल ने 2014 से

2022 के बीच खालिस्तानी समूहों से 133 करोड़ रुपए लिए।

इस लेटर में लिखा है कि 1 मई को एलजी के पास वर्ल्ड हिंदू फेडरेशन इंडिया के राष्ट्रीय महासचिव आशू मोंगिया ने एक शिकायत भेजी थी। इसमें सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर आम आदमी पार्टी के पूर्व कार्यकर्ता डॉ. मुनीष कुमार रायजादा के कुछ पोस्ट का प्रिंटआउट, एक लेटर और एक

पेनड्राइव भी थी। अपनी शिकायत में आशू मोंगिया ने पेनड्राइव के एक वीडियो का जिक्र किया था, जिसमें खालिस्तानी आतंकी और सिख फॉर जस्टिस का फाउंडर गुपतवंत सिंह पन्नू ने यह दावा किया था कि अरविंद केजरीवाल की पार्टी आप ने 2014 से 2022 के बीच खालिस्तानी समूहों से 1.6 करोड़ डॉलर यानी 133.60 करोड़ रुपए की फंडिंग ली है।

इसमें यह दावा भी किया गया था कि 2014 में केजरीवाल ने न्यूयॉर्क के गुरुद्वारा रिचमंड हिल में खालिस्तान समर्थक सिखों से मुलाकात की थी। इस मीटिंग में केजरीवाल ने वादा किया था कि अगर आम आदमी पार्टी को खालिस्तानी समूहों से फंडिंग मिलती रहेगी तो वे देवेन्द्र पाल भुल्लर की रिहाई में मदद करेंगे।

कन्नियाकुमारी तट के पास 5 मेडिकल छात्र समुद्र में डूबे

कन्नियाकुमारी (एजेंसी)। तमिलनाडु के कन्नियाकुमारी तट के पास 5 मेडिकल छात्र समुद्र में डूब गए। घटनाओं के एक दुखद मोड़ में, पांच मेडिकल छात्र, जो एक शादी में शामिल होने के लिए कन्नियाकुमारी गए थे, सोमवार को तमिलनाडु में शहर के तट के पास समुद्र में डूब गए। पीड़ित, जिनमें दो महिलाएं भी शामिल थीं, अपने पाठ्यक्रम के अंतिम सप्ताह में थे।

बस में घुसी स्कॉर्पियो, 5 की मौत

खेतड़ी (झुझुनू) (एजेंसी)। झुझुनू के सिंधाना में बाइक को टक्कर मारने के बाद बेकाबू हुई स्कॉर्पियो मिनी बस से जा भिड़ी। जबरदस्त भिड़ंत में 5 लोगों की मौत हो गई। वहीं, बस में सवार 20 से ज्यादा यात्री घायल हो गए। हादसा थली गांव के पास सोमवार सुबह 10.30 बजे हुआ। सिंधाना थानाधिकारी फैलाश चंद यादव ने बताया- बाइक को टक्कर मारने के बाद एसयूवी सामने से आ रही बस में घुस गई।

इजरायल ने राफा पर शुरू किया हवाई हमला, हमारा ने बताया खतरनाक, बोला- वार्ता नहीं करेंगे



तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायली सेना ने गाजा पट्टी के राफा पर हवाई हमला शुरू कर दिया है। राफा के कई इलाकों में विस्फोट की आवाजें सुनी गई हैं। हमले से पहले इजरायली सेना ने फिलिस्तीनियों को राफा को खाली करने को कहा था। इजरायली सेना के प्रवक्ता ने कहा था कि वह राफा से 1 लाख लोगों को निकालने के लिए तैयार हैं। इजरायली सेना के आदेश के बाद बड़ी संख्या में फिलिस्तीनियों को अपना घर-बार छोड़कर जाते हुए भी देखा गया। हालांकि, गाजा पर शासन चला रहे हमारा ने इस हमले को लेकर इजरायल को चेतावनी दी है। हमारा ने कहा है कि इजरायली सेना का राफा पर हमला और वहां से फिलिस्तीनियों को निकालना तनाव में एक खतरनाक वृद्धि है। यह पहले से ही तनावपूर्ण बंधक वार्ता को बाधित कर सकता है।

हमारा बोला- बंधक रिहाई वार्ता नहीं करेंगे

हमारा के प्रमुख वार्ताकारों में शामिल सामी अबू जुहरी ने अमेरिका के साथ इजराइल के गठबंधन का जिक्र करते हुए बताया, कब्जे के साथ-साथ अमेरिकी प्रशासन भी इस आतंकवाद की जिम्मेदारी लेता। उन्होंने चेतावनी दी कि यह खतरनाक वृद्धि है जिसके परिणाम होंगे। वाष्प के बराबर रविंद ने एक्स पर पोस्ट किया कि हमारा ने चेतावनी दी है कि बंधक वार्ता को निलंबित किया जा सकता है। मिस्र लगातार कतर के साथ मिलकर बाकी 132 बंधकों की रिहाई के लिए बातचीत की मध्यस्थता कर रहा है, लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला है।

कोविड से सबक लेते हुए चीन में एजेंसियों ने आईसीयू बेड बढ़ाने पर दिया जोर

शंघाई (एजेंसी)। चीन में कोरोना महामारी ने हाल ही में भारी तबाही मचाई थी। देश में इस महामारी के कारण हजारों लोगों की मौत हो गई थी। वहीं, अब चीन ने महामारी से हुई मौतों से सबक लिया है। चीन की कई एजेंसियों ने सोमवार को देश में आईसीयू बेडों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया। एजेंसियों ने अपने प्रस्ताव में कहा है कि देश में आईसीयू बेडों की संख्या साल 2025 तक प्रति 100,000 लोगों पर 15 और साल 2027 तक 18 तक होनी चाहिए।



चीन में कम है आईसीयू बेड

चीन ने हाल ही के समय में सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों के हिस्से के रूप में आईसीयू बेडों की संख्या को कुछ हद तक बढ़ाया है। हालांकि, देश की जनसंख्या को देखते हुए चीन को इस मामले में आलोचना का सामना करना पड़ता है। कई आलोचकों का कहना है कि देश की स्वास्थ्य प्रणाली अभी भी कम संसाधनों वाली है। चीन की कई एजेंसियों ने सोमवार को एक संयुक्त बयान जारी किया। अपनी सिफारिश में एजेंसियों ने कहा कि 2025 के अंत तक देश में प्रति 100,000 लोगों पर आईसीयू बेडों की संख्या 15 और 2027 के अंत तक इसकी संख्या 18 होनी चाहिए। राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग सहित कई एजेंसियों ने अपनी सिफारिश में अस्पताल के बिस्तरों की संख्या भी बढ़ाने पर जोर दिया। एजेंसी ने कहा कि साल 2025 तक आईसीयू में परिवर्तनीय क्षमता वाले बेडों की संख्या प्रति 100,000 लोगों पर 10 और 2027 तक 12 तक पहुंच जानी चाहिए।

तीसरा फेज, 11 राज्यों की 93 सीटों पर वोटिंग आज

- म.प्र.में मामा, महाराजा और राजा की किस्मत दांव पर; महाराष्ट्र में ननद-भौजाई मैदान में

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के तीसरे फेज में आज मंगलवार (7 मई) को 10 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की 93 सीटों पर वोटिंग होगी। पहले इस फेज में 10 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों की 95 सीटें थीं, लेकिन 21 अप्रैल को सूरत से कांग्रेस प्रत्याशी का पर्चा रह होने और 8 कैडिडेट के नामांकन वापस लेने के बाद भाजपा के मुकेश दलाल निर्विरोध निर्वाचित हो चुके हैं।



वहीं जम्मू-कश्मीर में खराब मौसम की वजह से अनंतनाग-राजौरी सीट का चुनाव टाल दिया गया है। अब यहां छठे फेज में 25 मई को वोट डाले जाएंगे। इसके अलावा मध्य प्रदेश की बैतूल सीट से बसपा प्रत्याशी के निधन के बाद सेकेंड फेज (26 अप्रैल) को होने वाली वोटिंग 7 मई को शिफ्ट कर दी गई। मध्य प्रदेश की तीन सीटों- विदिशा से शिवराज सिंह चौहान (मामा), गुना से ज्योतिरादित्य सिंधिया (महाराजा) और राजगढ़ से दिग्विजय सिंह (राजा) की किस्मत दांव पर है। इसके अलावा महाराष्ट्र की अमरावती सीट पर शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले और डिंडी सीएम अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार यानी ननद-भौजाई के बीच सीधा मुकाबला है।

एमपी में चुनावी रैली में राहुल गांधी बोले-

भाजपा को 150 सीटें भी नहीं मिलेंगी

- यह संविधान को बचाने का चुनाव, हम लोगों के अधिकार नहीं छीनने देंगे

आलीराजपुर/खरगोन (एजेंसी)। राहुल गांधी ने कहा कि हम आरक्षण को 50 प्रतिशत से आगे ले जाएंगे। कोर्ट ने 50 प्रतिशत का लिमिट लगा रखा है, उसे हटा देंगे। राहुल गांधी सोमवार को मध्यप्रदेश के आलीराजपुर के जेबट और खरगोन के सेगांव में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। दोनों ही सभाओं में उन्होंने ये बात कही। राहुल गांधी ने कहा कि बीजेपी और आरएसएस संविधान खत्म करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने 400 पार का नारा दिया है। लेकिन 400 सीट तो छोड़िए, इन्हें 150 सीटें भी नहीं मिलेंगी।

हम आरक्षण को बढ़ा देंगे, 50 प्रतिशत से ज्यादा कर देंगे- राहुल गांधी ने कहा- मोदी जी आपका आरक्षण खत्म करना चाहते हैं। उनके नेताओं ने साफ कहा है कि अगर हमारी सरकार आएगी। हम आदिवासियों से, दलितों से, पिछड़े वर्ग से आरक्षण छीन लेंगे, आरक्षण को खत्म कर देंगे। मैं आपको आज यहां ये बताने आया हूं, वो छीनने की बात कर रहे हैं। हम आरक्षण को बढ़ा देंगे। 50 प्रतिशत से ज्यादा कर देंगे। आज 50 प्रतिशत का लिमिट है। इस लिमिट को हम परे करके, 50 प्रतिशत लिमिट को रद्द करके, हम आपका रिजर्वेशन, गरीबों का रिजर्वेशन बढ़ाएंगे।



संविधान खत्म हुआ तो आपके अधिकार खत्म हो जाएंगे- राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संविधान को बदलना चाहते हैं। अगर संविधान खत्म हो गया तो जो अधिकार आपको मिले हैं, वे खत्म हो जाएंगे।

म.प्र.जबलपुर में ट्रैक्टर पलटने से पांच लोगों की मौत

सीएम मोहन यादव ने किया सहायता राशि का ऐलान

जबलपुर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में सोमवार को ट्रैक्टर पलटने से चार बच्चों सहित पांच लोगों की मौत हो गई है। वहीं, दो घायल हुए हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हादसे पर दुख जताते हुए आर्थिक सहायता का ऐलान किया है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक चारगवा थाना क्षेत्र के तिनेटा में धर्मंद ठाकुर की बहन की शादी थी और वह ट्रैक्टर से सामान लेने जा रहा था।

मंत्री पीएस के नौकर के घर मिला 25 करोड़ कैश

- ईडी ने झारखंड में 9 ठिकानों पर छापा मारा, पीएस के करीबी ठेकेदार के घर भी 3 करोड़ बरामद



रांची (एजेंसी)। झारखंड में ईडी की छापेमारी के बीच मंत्री आलमगीर आलम ने भी सफाई दी। आलमगीर आलम का कहना कि संजीव लाल पहले भी दो मंत्रियों के पीएस रह चुके हैं। वहीं करोड़ों रुपये कैश बरामदगी के बाद अब आलमगीर आलम की गिरफ्तारी की भी चर्चा तेज हो गई है।

झारखंड की राजधानी रांची में सोमवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीमों ने 9 जगह छपा मारा। ईडी को अब तक 28 करोड़ से ज्यादा कैश मिला है। ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम के पर्सनल सेक्रेटरी (पीएस) संजीव लाल के नौकर जहांगीर, पीएस के करीबी ठेकेदार मुन्ना सिंह, रोड कंस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट के इंजीनियर विकास कुमार और कुलदीप मिंज के घर रेंड डाली गई। इसके अलावा 3 और ठिकानों पर छपा मारा गया। पीएस संजीव के नौकर जहांगीर के घर 25 करोड़ और करीबी मुन्ना के यहां 3 करोड़ से ज्यादा का कैश मिला है। ईडी की टीम ने नोट गिनने की मशीन और कैश बैं नुलाई हैं। अबतक नोट गिनने के चार मशीनें घर के अंदर गई हैं। सूत्र बताते हैं कि पैसे इतने हैं कि गिनते गिनते मशीन रॉप हो रही है। दोपहर बाद एक और गाड़ी मशीन लेकर पहुंची है।

वीडी बोले-बचे हुए कांग्रेस केडिडेट मैदान छोड़ सकते हैं

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने कहा-कांग्रेस में कुछ बचा नहीं, इसलिए दो-तीन उम्मीदवार भाग गए

भोपाल (नप्र)। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेरा के कांग्रेस छोड़ने और छिद्रवाड़ा में मतदान के बाद से ही कमलनाथ, नकुल नाथ के नजर ना आने को लेकर सवाल उठाए। वीडी शर्मा ने यह भी कहा कि कांग्रेस को कमलनाथ के खिलाफ सर्च वारंट जारी करना चाहिए। वीडी शर्मा ने अभी कांग्रेस के दो-तीन उम्मीदवारों ने मैदान छोड़ा है अगले चरणों में हो सकता है कि कुछ और उम्मीदवार मैदान छोड़ दें। जीतू पटवारी ने इमरती देवी पर टिप्पणी की, और अब कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेरा ने ऐसे ही आरोप लगाकर कांग्रेस छोड़ी है, आप क्या कहेंगे?



वीडी शर्मा ने कहा कांग्रेस मूल चरित्र ही यही है। और इनका इतिहास भी यही कहता है। कुछ नेता तो ऐसे हैं कि इन्हीं बातों के कारण से वो नेता बने। बहन राधिका खेड़ा के साथ कांग्रेस के कार्यालय में छेड़खानी होती है। ये दुर्भाग्य जनक घटना इसलिए होती है क्योंकि वो बहन राम लला के दर्शन करने गई थी। उसके बाद उसे टारगेट बनाया जाता है। उसके साथ कार्यालय में छेड़खानी होती है। छह दिन तक वो कांग्रेस की सारी लीडरशिप से शिकायत करती हैं। लेकिन ना प्रियंका गांधी सुनती हैं ना सोनिया गांधी सुनती हैं। राहुल गांधी को तो सुनाई देता ही नहीं। इसलिए उस बहन ने कांग्रेस छोड़कर देश को बताया है कि आज कांग्रेस के हाल क्या हैं? बहन आप चिंता मत करिए, ये देश और देश की मातृशक्ति आपके साथ है। इसका जवाब कांग्रेस को इस चुनाव में जनता तो दे ही रही है। और मातृशक्ति ने तो तय कर लिया है कि जीतू पटवारी जैसे कांग्रेस के अध्यक्ष को बहुत रस चाहिए। तो इस बार तो ये तय हो गया है कि इस बार इतना रस मिलेगा मप्र में वोट के माध्यम से कि राहुल गांधी और जीतू पटवारी बेस्वाद हो जाएंगे।

भोपाल में बेरोजगारों को ठगने वाले पर एफआईआर कंसल्टेंसी ऑफिस का संचालक है आरोपी

मल्टी नेशनल कंपनी में नौकरी दिलाने के नाम पर की जालसाजी

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में नौकरी के नाम पर ठगी का मामला सामने आया है। कोहेफिजा पुलिस ने जालसाज के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। आरोपी ने बेरोजगारों को मल्टी नेशनल कंपनियों में नौकरी दिलाने का कहकर लाखों रुपए ठग लिए, लेकिन नौकरी नहीं लगवाई। पीड़ित बेरोजगार उसे लेकर थाने पहुंचे और पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।



थाने के सामने चलता था ठगी का अड़्डा

पुलिस के मुताबिक तलैया इलाके में रहने वाले कबीर अहमद (35) प्रायवेट काम करते हैं। पिछले साल उनकी मुलाकात सैफिया कालेज रोड पर रहने वाले उमर खान से हुई थी। वह कोहए फिजा थाने के सामने नान्दा काम्पलेक्स में कंसल्टेंसी का ऑफिस चलाता था। उमर ने कबीर को बताया कि वह अमेजन, फ्लिपकार्ड और वोडाफोन जैसी मल्टी नेशनल कंपनियों में नौकरी लगवाने का काम करता है।

कंसल्टेंसी फीस के नाम पर हड़पता था रकम

अक्टूबर 2023 में कबीर ने नौकरी के लिए उसके पास रजिस्ट्रेशन करवाया और बताई गई फीस जमा कर दी। कई महीनों तक जब नौकरी नहीं मिली तो उन्होंने अपने पैसे वापस मांगे, इस पर उमर टालमटोल करने लगा। इस दौरान कबीर को पता चला कि उमर उनके अलावा चालीस-पचास अन्य लोगों से पांच से छह लाख रुपये नौकरी लगवाने के नाम पर ले चुका है।

बड़ सकती है पीड़ितों की संख्या

रविवार को कबीर और अन्य पीड़ितों ने उमर खान को पकड़ लिया और उसे लेकर कोहेफिजा थाने पहुंचे। यहां देर रात को कबीर की रिपोर्ट पर पुलिस ने उमर खान के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर लिया। पुलिस का कहना है कि बेरोजगार पीड़ितों की संख्या बढ़ सकती है।

भोपाल में सगाई के दो महीने बाद युवक की मौत

ट्रक और एम्बुलेंस की आमने-सामने से हुई थी टक्कर, इलाज के दौरान तोड़ा दम

भोपाल (नप्र)। बैरसिया इलाके में एम्बुलेंस को ट्रक ने सामने से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में घायल चालक की इलाज के दौरान रविवार की देर रात मौत हो गई। मृतक युवक को दो महीने पहले ही सगाई हुई थी। नवंबर महीने में उसकी शादी होना थी। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक ऋषि कुशवाह (25) पुत्र स्वर्गीय राज कुशवाह निवासी नारीयलखेड़ा पुलिस चौकी के पास एम्बुलेंस चलाने का काम करता था। 30 अप्रैल की दोपहर को बैरसिया में पेशेंट को छोड़कर भोपाल लौट रहा था। रास्ते में तरावली जोड़ के पास उसे सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी।

हनीट्रैप केस से जुड़े मानव तस्करी मामले में 3 आरोपी बरी, भोपाल कोर्ट ने सुनाया फैसला

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के बहुचर्चित हनीट्रैप केस में मानव तस्करी के मामले में सोमवार को 3 आरोपियों को बरी कर दिया गया। फैसला भोपाल की एडीजे पल्लवी द्विवेदी की कोर्ट ने सुनाया है। साल 2019 के इस मामले का खुलासा नगर निगम इंद्रौर के तत्कालीन चीफ इंजीनियर हरभजन सिंह की शिकायत के बाद हुआ था। उन्होंने इंद्रौर के पलासिया थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। जिसमें बताया कि उन्हें कुछ युवतियों ने अश्लील वीडियो के नाम पर ब्लैकमेल किया, और 3 करोड़ रुपए की मांग की है। इसके बाद पुलिस ने 6 महिलाओं समेत आठ को आरोपी बनाया था।

आज वोट डाला तो जीत सकते हैं डायमंड रिंग भोपाल में पहली बार वोट डालने पर गिफ्ट भी मिलेगा; 3 झ होंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल लोकसभा सीट पर मंगलवार सुबह 7 बजे से वोटिंग शुरू होगी, जो शाम 6 बजे तक चलेगी। चुनाव में पहली बार वोट डालने पर मतदाता गिफ्ट भी जीत सकते हैं। पूरे दिन बूथ पर ही 3 झ होंगे। वहीं, वोटिंग के बाद बंपर ड्रा भी होगा, जिसमें डायमंड रिंग जैसे कई गिफ्ट वोटर्स को मिल सकते हैं।

वोटिंग कराने के लिए सोमवार को मतदान दल कुल 2034 पोलिंग बूथ की ओर रवाना हो चुके हैं। इनके साथ हर बूथ पर एक टीम ऐसी भी रहेगी, जो सुबह 10 बजे, दोपहर 3 बजे और शाम 6 बजे ड्रा भी खोलेगी। इस टीम को सोमवार को इस बात की ट्रेनिंग दी गई कि वे मतदाताओं को ड्रा में कैसे शामिल करेंगे?

वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के लिए सबकुछ-वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के लिए यह कवायद की गई है। जिसमें डायमंड रिंग के अलावा फ्रीज, वॉशिंग मशीन, कूलर, एसी, म्यूजिक सिस्टम, मिक्सर, टीवी, गैस चूल्हा, कुकर, माइक्रो वेव, डायनिंग टेबल, लैपटॉप जैसे गिफ्ट भी हैं।

होटल में मिलेगा 10 प्रतिशत का डिस्काउंट-शहर के व्यापारिक संगठनों के सहयोग से जिला प्रशासन यह कवायद कर रहा है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह



ने बताया कि मतदान वाले दिन 3 झ होंगे। वहीं, बाद में बंपर ड्रा भी खोला जाएगा। जिसमें वे वोटर्स जो ड्रा में शामिल होंगे, उन्हें शामिल किया जाएगा। भोपाल चेंबर

ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष तेजकुलपाल सिंह पाली ने कहा कि मतदान करने पर 10 प्रतिशत का डिस्काउंट भी दिया जाएगा।

भोपाल गैसकांड वाले कारखाने में लगी आग यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री से उठी लपटें

भोपाल (नप्र)। भोपाल में सोमवार को गैस कांड वाले यूनियन कार्बाइड कारखाने में आग लग गई। दोपहर करीब 3.30 बजे कारखाने में प्लास्टिक के टैंक में आग लगी। राहगीर की सूचना पर मौके पर पहुंची नगर निगम की फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशकत से इस पर काबू पाया।

प्रच्यक्षदर्शी बोला- टैंक में लपटें उठती दिखाई दी- यूनियन कार्बाइड कारखाना परिसर के सामने स्थित जेपी नगर की गली नंबर 10 में रहने वाले देवेन्द्र कांसोटे ने बताया कि वह कारखाने के सामने से गुजर रहा था।



तभी फैक्ट्री परिसर में धुंआ उठता दिखाई दिया। इस पर यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री की बाउंड्रीवाल के नजदीक जाकर देखा तो अंदर एक टैंक से आग की लपटें उठती हुई दिखाई दी।

उसने तत्काल नगर निगम के फायर कंट्रोल रूम को घटना की जानकारी दी। करीब 10 मिनट बाद पहुंची दमकलों ने कारखाना परिसर में लगी आग को 20 मिनट की मशकत के बाद काबू कर लिया। आग के नियंत्रित हो जाने के बाद जब फायर अमले ने आग के कारणों की तपतीश की, तो आग प्लास्टिक की टंकी में लगने का खुलासा हुआ।

भोपाल में ही नूर महल गली में ट्रांसफॉर्मर जला- भोपाल में ही आग लगने की दूसरी घटना नूर महल गली की है। यहां सोमवार दोपहर कबाड़ में लगी आग की लपटों से बिजली का ट्रांसफॉर्मर जल गया। फतेहगढ़ फायर स्टेशन के फायर कर्मी शाहनवाज अहमद ने बताया कि आग पर काबू पा लिया है।

भोपाल में घूमता दिखा 6 माह से फरार डॉक्टर बच्चे के इलाज के नाम पर आयुष्मान से निकाले 3.35 लाख; पिता से वसूला बिल



इस डॉक्टर के कारण मेरा बेटा इस दुनिया में नहीं रहा। मैं आरोपी डॉक्टर को सलाखों के पीछे पहुंचाने तक लड़ाई लड़ता रहूँगा। मैंने पुलिस को फरारी के दौरान डॉक्टर को अस्पताल में भर्ती कराया था। डॉक्टर के कई वीडियो सहित प्रमाण दिए हैं। इसके बाद भी उसकी गिरफ्तारी नहीं की जा रही है।

इस बच्चे के इलाज के नाम पर फर्जी तरीके से रकम हड़पने का आरोप डॉक्टर पर है। बाद में बच्चे की उपचार के दौरान मौत भी हो गई थी।

तीन महीने तक चला था इलाज- टीला जमालपुरा की हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में रहने वाले खालिद अली पुत्र जाकिर अली (26) ने अपने तीन महीने के बेटे को इलाज के लिए जनवरी 2021 में फतेहगढ़ स्थित मैक्स चिल्ड्रन अस्पताल में भर्ती कराया था। खालिद अली के पास आयुष्मान कार्ड था इसलिए उन्होंने अस्पताल में बताया कि इस कार्ड से ही इलाज कीजिए। इस पर अस्पताल की ओर से कहा है कि अभी हमारा अस्पताल से आयुष्मान कार्ड के जरिए इलाज नहीं हो रहा है। यह कहने के बाद भी उन्होंने खालिद अली से आधार कार्ड समेत अन्य दस्तावेज आयुष्मान कार्ड की जानकारी जमा करवाने को कहा। खालिद ने वह दस्तावेज जमा करवा दिए। अस्पताल में इलाज के बाद उन्होंने 37 हजार रुपए का पैमेंट करवा दिया। यह वो अमाउंट है जिसके बिल अस्पताल की ओर से दिए गए। फरियादी का कहना है कि लाखों रुपए के उपचार और दवाओं के बिल नहीं दिए गए थे।

92 वर्षीय जगदीश कौशल आज भोपाल में डालेंगे वोट

भोपाल। जनसंपर्क विभाग के पूर्व अपर संचालक जगदीश कौशल 7 मई को भोपाल में मतदान करेंगे। श्री कौशल जनसंपर्क विभाग में सहायक जनसंपर्क अधिकारी से पदोन्नत होकर अपर संचालक के पद पर कार्य कर चुके हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश शासन के लिए छायांकन कार्य भी किया है। वे एक अच्छे विजुलाइजर भी हैं। आज भी सक्रिय हैं। कौशल जी साठ के दशक से मतदान करते आ रहे हैं।

6 देशों के नेताओं ने देखा एमपी में चुनाव इजराइल-श्रीलंका के नेता बोले- बैलेट छोड़ ईवीएम अपनाएं

नेपाल को बीजेपी का बूथ-मैनजमेंट पसंद आया

भोपाल (नप्र)। बूथ मैनेजमेंट में दोनों देश लगभग एक समान हैं, लेकिन वह बैलेट पेपर से चुनाव होते हैं, यहां ईवीएम से। ईवीएम के जरिए वोटिंग काफी आसान होती है, चुनाव फेयर होते हैं। हम भी कोशिश करेंगे कि वहां इसे लागू कर सकें। इससे चुनाव प्रभावित नहीं होता।

ये कहना है एरियल बुलश्टेइन का। वे इजराइल की लिक्वुड पार्टी के नेता हैं। एरियल बीजेपी के बुलावे पर भारत का लोकसभा चुनाव देखने आए हैं। दरअसल, बीजेपी ने लोकसभा चुनाव शुरू होने से पहले दुनिया के देशों के 25 राजनीतिक दलों को अपना चुनाव प्रचार दिखाने और रणनीति समझाने के लिए न्योता भेजा था।

ये सभी लोग बीजेपी के नो बीजेपी अभियान के तहत भारत आए हैं। 6 देशों के सतारूढ़ और विपक्षी दलों के नेताओं ने मध्यप्रदेश में चुनावों को नजदीक से देखा। इन्होंने लोकसभा क्षेत्रों का दौरा भी किया और रैलियों में भी हिस्सा लिया।

विदेशी प्रतिनिधियों ने किया एमपी, छत्तीसगढ़ और गुजरात का दौरा- 6 देशों के सतारूढ़ और विपक्षी दलों के नेताओं ने तीन राज्यों का दौरा किया। मध्यप्रदेश में 6 देशों का प्रतिनिधि मंडल भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ सागर लोकसभा में आने वाली सीट रिसोर्ज पहुंचा।

सागर लोकसभा की सीट का चुनाव मैनेजमेंट देखने के बाद ये सभी लोग विदेशी होते हुए भोपाल पहुंचे। यहां इन्हें भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा का रोड शो भी दिखाया गया। इस दौरान जेपी नड्डा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के साथ वॉर रूम भी पहुंचे। तीनों राज्यों में जो दल गए उनके साथ विदेशों में रहने वाले कार्यकर्ता भी



शामिल हुए। भाजपा के विदेश विभाग के सह-संयोजक डॉ. सुधांशु गुप्ता के मुताबिक भारत दौरे पर अविच पॉलार ओब्रीर (डायरेक्टर, फॉरेन अफेयर्स, नेशनल रजिस्ट्रेंस पार्टी, युगांडा), उदय शुमशेर जेबी राणा (फेडरल पार्लियामेंट सदस्य और केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य, नेपाल), डॉ. जय कांत राउत (अध्यक्ष, नेशनल कौंसिल ऑफ जनमत पार्टी, नेपाल) काकुलंडला लियाणागे सुमुदु दिलंगा (अध्यक्ष, यंग प्रोफेशनल आर्गनाइजेशन, युएनपी श्रीलंका), एरियल बुलश्टेइन (प्रभारी, फॉरेन अफेयर्स, लिक्वुड पार्टी, इजराइल), विजय मखान (इंटरनशनल रिलेशन्स, मॉरिशियन मिलिटेंट मूवमेंट, मॉरिशस), त्रान थान हुआंग (पॉलिटेकल कौंसिलर, कम्युनिस्ट पार्टी, वियतनाम), हो थी होंग हान (प्रथम सचिव, कम्युनिस्ट पार्टी, वियतनाम) शामिल हुए।

एरियल बोले- भारत और इजराइल के वोटिंग पेटर्न में अंतर- इजराइल की लिक्वुड

बीजेपी नेता बोले-पोलिंग पार्टी, पुलिस सपोर्ट करेगी आगर में कहा- इन्हें ऊपर से निर्देश; कांग्रेस ने की कार्रवाई की मांग

आगर मालवा (नप्र)। राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र में बीजेपी के एक नेता का वीडियो सामने आया है। जिसमें वो कह रहे हैं कि ऐसे बूथ तय करो जहां बैठा कांग्रेस का व्यक्ति आपके पक्ष में रहे। इस काम में पोलिंग पार्टी से लेकर पुलिस तक आपका सहयोग करेगी। सभी को ऊपर से निर्देश है। बता दें कि राजगढ़ लोकसभा सीट पर 7 मई को वोटिंग होना है।

ये वीडियो आगर जिले के सुसनेर विधानसभा क्षेत्र के नलखेड़ा का बताया जा रहा है। जिसमें भाजपा के जिला प्रभारी सोनू गेहलोत कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे हैं।



वे कह रहे हैं- मुझे प्रसन्नता तब होगी, जब आपके 90 बूथ में से 30 बूथ ऐसे निकले परसों कि पोलिंग बूथ पर कांग्रेस का व्यक्ति बैठे तो सही, लेकिन वो पूरी तरह से आपके पक्ष में रहे। कौन-कौन कर सकता है ऐसे? पोलिंग पार्टी आपको सपोर्ट करेगी। पुलिस आपको सहयोग करने वाली है। कोई समस्या नहीं सबको निर्देश के ऊपर से।

कांग्रेस ने कहा- भाजपा देशद्रोह कर रही- बीजेपी नेता के इस वीडियो पर कांग्रेस ने कड़ी आपत्ति जताई है। कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता गुड्डु लाला ने कहा कि भाजपा देशद्रोह कर रही है। हम सुसनेर विधायक भैरोसिंह परिहार के साथ थाने में और निर्वाचन आयोग के शिकायत करने जा रहे हैं।

कांग्रेस ने चुनाव आयोग से किया सवाल- मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के मीडिया सलाहकार केके मिश्रा ने पूछ- चुनाव आयोग और भाजपा के बीच ऐसा कोई अनुबंध हुआ है क्या? यदि नहीं तो इस स्पष्ट प्रमाण के बाद आप कोई कार्रवाई कर चुनाव आयोग की निष्पक्षता को प्रमाणित करेंगे क्या?

संपादकीय

प्रदेश में बेखौफ रेत माफिया

तमाम दावों औ कोशिशों के बाद भी मध्यप्रदेश में रेत और खनन माफिया के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। वो अवैध खनन रोकने वाले सरकारी कर्मचारियों की जान लेने से भी नहीं हिचक रहे। ताजा घटना शहडोल जिले में हुई, जिसमें अवैध रेत से भरी ट्रॉली को रोकने पर ट्रैक्टर चालक ने पुलिस के एएसआई को कुचल कर मार डाला। जिले के ब्यूहारी थाने में पदस्थ एएसआई महेन्द्र बागरी एक आपराधिक मामले में फरार स्थायी वारंटो को पकड़ने बड़ौली गांव गए थे। एएसआई गया प्रसाद कन्नौजे और आरक्षक संजय दुबे उनके साथ थे। इसी दौरान खड्डौली गांव के पास सामने से ट्रैक्टर-ट्रॉली आती दिखी। यह ट्रैक्टर राज समाधिन नदी से अवैध तरीके से रेत खनन करके ला रहा था। बागरी ने उसे रोकने का इशारा किया लेकिन ड्राइवर उन्हें कुचलता हुआ ट्रैक्टर-ट्रॉली को आगे बढ़ा ले गया। इस घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने जमीझी गांव के रहने वाले ट्रैक्टर ड्राइवर राज रावत उर्फ विजय और उसके साथी आशुतोष को रात में ही गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी एएसआई को कुचलने के बाद भागने की फिराक में थे। वहीं, ट्रैक्टर मालिक सुरेंद्र सिंह की तलाश में पुलिस टीमें दबिंश दे रही हैं। उस पर 30 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है। सुरेंद्र अगस्त में रेत चोरी के आरोप में गिरफ्तार हो चुका है। साथ ही मुख्य आरोपी का घर भी बुलडोजर से ढहा दिया गया है। सभी आरोपियों का आपराधिक रिकॉर्ड है। उधर एएसआई के शव के साथ भी अमानवीय व्यवहार की खबरें मिली हैं। शव का जमीन पर रखकर पोस्टमार्टम किया गया और उसकी पत्नी को एंबुलेंस में पति के अंतिम दर्शन भी नहीं करने दिए गए। इसके पहले रेत माफिया कुछदिन पहले एक पटवारी की भी जान ले चुका है। लेकिन रेत माफिया के खिलाफ कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं होती। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अधिकांश जगहों पर रेत माफिया को राजनीतिक संरक्षण मिला हुआ है। कई जगह सरकारी अमला भी मिला हुआ है। ऐसे में रेत माफिया पर कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हो पाती। मग्न में तो रेत माफिया पर लगाम कसने के चक्कर में एक आईपीएस अधिकारी की मौत भी हो चुकी है। शहडोल वाले मामले में भी प्रशासन ने मुख्य आरोपी का घर बुलडोजर से ढहाकर इतिथी कर ली। आगे क्या हुआ, किसी को नहीं मालूम। नदियों में अवैध रेत खनन से पर्यावरण को भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है। सरकार इससे मिलने वाली रॉयल्टी पर ही अपनी पीठ थपाथपा रही है। लेकिन हकीकत यह है कि रेत माफिया ने प्रदेश की नदियों को खोखला कर दिया है। नर्मदा नदी से लेकर बेतवा नदी, सिंध नदी सहित अनेक नदियां ऐसी हैं, जिन पर पोकेलेन मशीन नजर आना आम बात है। कई माफिया तो ऐसे हैं, जो पनडुब्बी तक का रेत खनन के लिए सहारा लेते हैं। इन पर कार्रवाई इस लिए भी नहीं होती, क्योंकि इन इलाकों में जो अधिकारी पदस्थ किए जाते हैं, वो भी राजनेताओं की सिफारिश पर ही तैनात होते हैं। सरकार रेत खनन की नीति बदलती रहती है ताकि इससे सरकारी खजाने को ज्यादा से ज्यादा आय हो। लेकिन वास्तव में राज्य के नदी नालों से मनमर्जी और बिना किसी अनुमति के थोक में रेत निकाली जा रही है और दूसरे राज्यों को भेजी जा रही है। लेकिन अब पानी सिर के ऊपर से गुजरने लगा है। अगर समय रहते रेत माफिया पर अंकुश न लगाया गया तो राज्य में माफिया राज कायम होते देर नहीं लगेगी। सरकार को इसे सख्ती के साथ रोकना चाहिए ताकि भविष्य में शहडोल जैसे हादसे न हों।

आम चुनाव

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

सूरत लोकसभा के हुए निर्विरोध निर्वाचन के मामले को लेकर जब कांग्रेस द्वारा भारतीय संविधान की दुहाई दी जा रही हो, तब उम्मीदवार का नामांकन निरस्त कर (खजुराहो संसदीय क्षेत्र) एवं तीसरे चरण में हो रहे इंदौर लोकसभा से भी कांग्रेस उम्मीदवार का नामांकन वापिस करवाकर भाजपा में शामिल कर, यथासंभव निर्विरोध चुनाव की नई नीति की अचानक आहट इस लोकसभा चुनाव सुनाई देने लगी है। यह स्थिति तब पैदा हो रही है या की जा रही है, जब दोनों लोकसभा क्षेत्र सूरत व इंदौर से लगातार वर्ष 1989 से व खजुराहो से वर्ष 2004 से भाजपा भारी बहुमत से चुनाव जीतती चली आ रही है। ‘ऐसी स्थिति में इस पहलू पर जरूर विचार करना आवश्यक हो जाता है कि क्या नोटा के रहते एकमात्र बचे उम्मीदवार को ‘निर्विरोध’ निर्वाचित घोषित करने की कानूनी स्थिति पर पुर्नविचार का समय नहीं आ गया है?

नोटा का अर्थ- भारतीय संविधान व जन प्रतिनिधित्व कानून में मूल रूप से “नोटा” का प्रावधान नहीं था। परंतु “पीपुसील्ल बनाम भारत सरकार” के मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्देश के पालन में दिसंबर 2013 में पहली बार मध्य प्रदेश सहित पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में चुनाव आयोग ने ‘नोटा’ का विकल्प भी मतदाता को दिया, तब भारत नोटा का विकल्प देने वाला विश्व का 14वां राष्ट्र बना। वर्ष 2014 में राज्यसभा के चुनाव में भी नोटा का प्रयोग किया गया। यह एक नकारात्मक प्रक्रिया है, जहां नोटा का कोई चुनावी मूल्य नहीं होता है। यह सिर्फ प्रत्याशी की अयोग्यता को दिखाने में मददता को समझ बनाता है। लेकिन यह भी सच है कि नोटा एक ‘काल्पनिक उम्मीदवार’ होता है, जिस प्रकार भगवान एक लॉगल एन्टाइटी (वैध व्यक्ति) होते हैं। ‘नोटा’ का मतलब ऐसा ‘दंतहीन विकल्प’ है, जो समस्त उम्मीदवारों को अस्वीकार करने का अधिकार देता है।

जब खुद चुनाव आयोग जोर शोर से यह प्रचारित, प्रसारित करता है कि प्रत्येक नागरिक को अपने ‘मताधिकार’ का उपयोग हर हालत में करना ही चाहिए और 100 परसेंट वोटिंग होना चाहिए, तब ‘निर्विरोध’ परिणाम के कारण सूरत लोकसभा क्षेत्र के लगभग 16 लाख वोटर को तथा उनमें से वे युवा वोटर जिन्हें पहली बार मताधिकार का अधिकार मिला है, वे अपने इस अधिकार से वंचित हो गये और उन्हें वोट देते हुए ‘सेल्फी’ खींचने का मौका भी नहीं मिल पाया। मतदान न करने पर सजा

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबन्धु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923, Ph. No. 0755-2422692, 4059111 Email- subahsaverenews@gmail.com

‘सुबह सवेरे’ में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

मध्यप्रदेश : आज सात मई को नौ का फैसला!

चुनाव-चौबीस

डॉ. सुधीर सक्सेना

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

1 | मई को गैरिकवसना संन्यासिनी उमाश्री भारती शिवपुरी में थीं। गुना से बीजेपी की टिकट पर चुनाव लड़ रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रचार के वास्ते। कहा तो उन्होंने यही था कि चुनाव 24 में वह प्रचार से दूर रहेंगी। अपने इस कौल को उन्होंने लगभग आखिरी चक्र तक निभाया। 24 अप्रैल को अपने गृहग्राम डूझ आई। वोट डाला और चली गई। उल्लेखनीय है कि ज्योतिरादित्य की सगी बुआ श्रीमती यशोधरा राजे भतीजे के चुनाव प्रचार में फटकी तक नहीं, जबकि ज्योतिरादित्य की पत्नी और बेटे-बहू ने प्रचार में खूब शिरकत की।

फिर क्या वजह है कि उमाश्री ने अपना वचन भंग किया? ज्योतिरादित्य और उमाश्री में बुआ-भतीजे का रिश्ता है। उमाश्री की राजनीतिक दीक्षा और करियर में राजमाता विजयाराजे सिंधिया यानी ज्योतिरादित्य की दादी की सर्वप्रथम भूमिका रही है। उमाश्री का आना क्या सिर्फ इसी रिश्ते का निर्वाह था या उन्हें फिर ऐसी कोई भनक लगी थी कि भतीजे की जीत की संभावना को गारंटी में बदलने वह पहाड़ों से भागी-भागी चंबल के खादर में चली आई? कहीं ऐसा तो नहीं है कि दुश्मिताग्रस्त ज्योतिरादित्य ने बुआ को संदेशा भेजा हो? गौरतलब है कि बीजेपी के सितारा-लिस्ट में इस बार उमाश्री को स्थान नहीं मिल पाया है।

बहरहाल, उमाश्री के रोड शो और सभा के अभिप्राय को बूझा जा सकता है। ग्वालियर-चंबल संभाग में हर एक सीट पर मुकाबला कड़ा है। यही वजह है कि मोदी और शाह आये। बहन मायावती आईं। 2 मई को प्रियंका मुरैना आईं। सीएम डॉ. मोहन यादव संभाग में फिर-फिर आये। कल के केंद्रीय मंत्री और वर्तमान में मध्यप्रदेश विधानसभा के स्पीकर नरेन्द्रसिंह तोमर ने तो भोपाल की प्रोफेसरस कॉलोनी की सरकारी कोठी छोड़कर मुरैना में डेरा ही डाल दिया। 28-01 की अंक तालिका और मिशन 29 समूची भगवा ब्रिगेड के जेहन में है। किला दरकने का डर सबको सता रहा है। पसलियों में दिल धाड़-धाड़ बज रहा है। मध्यप्रदेश में सात मई को नौ लोकसभा क्षेत्रों में मतदान होगा। वाकओवर कहीं भी नहीं है। अधिकांशतः मुकाबला कांग्रेस और भाजपा के बीच ही है, मगर कुछ ठौर बहुजन समाज पार्टी ने पेंच फंसा रखा है।

सात मई को जिन क्षेत्रों में मतदान होगा वे हैं -

ग्वालियर, भिंड, मुरैना, गुना, राजगढ़, भोपाल, विदिशा, बैतूल और सागर। यह सभी सीटें बड़ा मायना रखती हैं। पिछले चुनाव में हार से सतर्क सिंधिया फूंक-फूंक कर कदम रख रहे हैं। उनका मुकाबला बीजेपी से कांग्रेस में आये राव यादवेन्द्र सिंह से है। करीब सवा दो लाख यादव और करीब डेढ़ लाख मुस्लिम यादवेन्द्र की ताकत है। करीब तीन लाख कुशवाहों और डेढ़ लाख किरार-धाकड़ों को बीजेपी का वोट बैंक माना जा रहा है। उमाश्री की मनुहार से लोध और लोधा बीजेपी को वोट दे सकते हैं। राजवेन्द्र के पिता राव देशराज सिंह यादव प्रभावशाली और प्रतिष्ठित नेता रहे हैं। अलग-अलग जातियों पर डेरें डालने का खेल दोनों ही पार्टियां कर रही हैं।

जातीय समीकरणों को साधने का खेल मुरैना में शबाब पर है। यहां स्पीकर नरेन्द्रसिंह तोमर की प्रतिष्ठ दंव पर है, क्योंकि शिवमंगल सिंह तोमर को उन्हीं की



पैरवी से टिकट मिला है। प्रारंभिक दौर में शिवमंगल सत्यपालसिंह सिकरवार के मुकाबले कमजोर नजर आ रहे थे, लेकिन प्रतिष्ठित तेल व्यवसायी रमेश गर्ग को बसपा ने मैदान में उतारकर मुकाबले को रोमांचक और त्रिकोणीय बना दिया है। यहां वैश्यों और दलितों का एका गुल खिला सकता है और गर्ग नया सर्ग लिख सकते हैं।

बसपा के मैदान में उतरने से ग्वालियर सीट पर भी पेंच फंस गया है। यहाँ कांग्रेस के प्रवीण पाठक और भाजपा के भारतसिंह कुशवाह के बीच आमने सामने की लड़ाई थी, लेकिन बसपा ने कल्याणसिंह कंसाना को मैदान में उतार कर कुछ हद तक समीकरण गड़बड़ दिये है। कंसाना वोट- कटवा प्रत्याशी माने जा रहे हैं। ब्राह्मणों और राजपूतों के बीच पारंपरिक लांगडॉट और दलितों-मुस्लिमों के कांग्रेस की ओर झुकाव से राजनीतिक पंडित नये सिर से कयास लगा रहे हैं। दिलचस्प तो पर ग्वालियर सीट पर जय-पराजय में महल की भूमिका गौण हो गयी है।

पड़ोसी राजगढ़ सीट पर दिलचस्प चुनावी संग्राम का नजारा देखने को मिल रहा है। यहां से कांग्रेस की ओर से वरिष्ठ और शक्तिशाली नेता दिग्विजय सिंह चुनाव लड़ रहे हैं, जिन्हें कमतर नहीं आँका जा सकता। संघ के कट्टर और मुखर विरोधी होने से वह संघ परिवार की आंखों की किरकिरी है; लिहाजा उन्हें हराने के लिये संघ ने पूरी ताकत झोंक रखी है। दिग्विजय, जो राजा साहब के नाम से विख्यात है, यहाँ से दो बार और उनके अनुज लक्ष्मणसिंह चार बार चुनाव जीत चुके हैं। इस चुनाव में लक्ष्मण की निष्क्रियता समझ से परे है जबकि दिग्गी राजा की पत्नी और विधायक पुत्र प्रचार में जुटे हुए हैं। व्यक्तित्व के मान से बीजेपी के प्रत्याशी और दो बार के विजेता निवर्तमान सांसद रोडमल नागर उनके सामने हलके पड़ते हैं। दस साल के सांसद-काल में उनकी सक्रियता भी कम रही है। दिग्विजय सिंह प्रतिदिन पांच-प्यादे करीब 25 किमी की पदयात्रा कर मतदाताओं से संपर्क साधते हैं। गांवों-

कस्बों के सयाने उनके नाम और काम से सुपरिचित हैं। दिग्विजय सिंह की इस आशय की भावनात्मक अपील पुरअसर है कि वह अपने जीवन का आखिरी चुनाव लड़ रहे हैं। राजगढ़ की भाँति सबकी निगाहें विदिशा पर भी टिकी हुई है, जहां से सर्वाधिक काल तक सूबे के मुख्यमंत्री रहे सोभाग्यशाली शिवराजसिंह चौहान चुनाव लड़ रहे हैं। पहले अटलबिहारी वाजपेयी, फिर शिवराजसिंह और फिर सुषमा स्वराज, विदिशा में बीजेपी में बेटन थमाने की परंपरा रही है। अब बेटन एक बार फिर शिवराज के हाथों में है। कांग्रेस ने यहां सन् 80 और सन् 84 में विजयी प्रतापभानु शर्मा पर दांव लगाया है। राजीव गांधी के क्लोन-शेव क्लब के सदस्य रहे प्रतापभानु सकारात्मक सोच और उजली कमीज के नेता हैं। शिवराज को पिछड़ी जातियों और लाइली बहनों का भरोसा है, किंतु ब्राह्मणों, दलितों और मुस्लिमों के एक- मुश्त मतों के भरोसे प्रतापभानु ने बिलाशक शिवराज को सांसत में डाल रखा है।

इसी संभाग की अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित भिंड सीट भी हार जीत को लेकर जेरे- बहस है। यहां मौजूदा बीजेपी सांसद सुश्री संध्या राय को कांग्रेस के तेजतर्रार और तुर्शुजुबां नेता फूलसिंह बैरैया ने चुनौती दे रखी है। बैरैया कभी प्रदेश बसपा के मुखिया हुआ करते थे। बैरैया की जीत की संभावना इस नाते ज्यादा आंकी जा रही है क्योंकि क्षेत्र में दलित वोटों की तादाद लगभग एक तिहाई है। प्रियंका के आने से भी बैरैया के प्रचार को गति मिली है।

राजधानी भोपाल में हार-जीत को लेकर अधिक आसमंजस नहीं है, क्योंकि पिछले करीब चार दशकों से भोपाल बीजेपी प्रत्याशी का वर्णन करता रहा है। इस क्रम को तोड़ना कांग्रेस के लिए वक्त के साथ कठिन से कठिनतर होता गया है। यहां तक कि पिछले चुनाव में यहाँ दिग्गी राजा को भी करारी पराजय का सामना करना पड़ा था। हिन्दुत्ववादी नेता को बढ़ाने के क्रम में बीजेपी ने साध्वी प्रज्ञा को रिपीट करने के बजाय आलोक शर्मा पर दांव लगाया है। उनके मुकाबले कांग्रेस ने अरुण श्रीवास्तव को मैदान में उतारा है। पार्टी को उम्मीद है कि उन्हें पांच लाख मुस्लिम और ढाई लाख कायस्थों के वोट मिलेंगे। कहना कठिन है कि कांग्रेस का यह अनुमान कसौटी पर खरा उतरेगा, क्योंकि कायस्थ वोट बैंक में बिखराव के आसार है।

अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित बैतूल में कांग्रेस और बीजेपी के बीच सीधा मुकाबला है। बैतूल के निवर्तमान बीजेपी सांसद दुर्गादास उड्के का हथ्र ग्वालियर के सांसद विवेक शेजवलकर की भाँति नहीं हुआ। वह पुनः मैदान में हैं और उनका सामना रामू टेकाम से हैं, जिनके लिये सभा करने छिंदवाड़ा में मतदान के अगले दिन पूर्व केंद्रीय मंत्री कमलनाथ आये। नाथ के आने से कांग्रेस नेताओं में एकजुटता और कार्यकर्ताओं में सक्रियता नजर आई, अलबत्ता साधनों के मामले में कांग्रेस बीजेपी से हर कहीं पीछे है। कांग्रेस को मुद्दों का आसरा है तो बीजेपी को सर्वत्र मोदी मैजिक का सहारा।

बुंदेलखंड की सागर सीट भी इससे मुक्त नहीं है। बीजेपी की लता वानखेड़े भी मोदी मैजिक के सहारे चुनावी वैतरणी में पार घाट लगा जाये तो बात दीगर, अन्यथा कांग्रेस ने गुरुईसिंह बुंदेला को मैदान में उतारकर कट्ट चुनौती पेश की है। झूठ बोले कौवा काटे फेम के विद्वत्भाई पटेल की नगरी सागर मंत्रियों की नगरी है और बीजेपी के पास विपुल साधन है, जबकि बीजेपी को राजनीतिक हॉके के फलस्वरूप कांग्रेस के पास कार्यकर्ताओं तक का टोटा है। इस न्यूनता के बावजूद गुड्डू बुंदेला ने जिस हौसले से चुनाव लड़ा है, वह काबिले तारीफ है। किस्सा कोताह यह कि सात मई को मध्यप्रदेश की नौ सीटों पर मतदान मायने राखता है और अंक तालिका में फेर बदल का बायस बन सकता है।

‘नोटा’ विकल्प के रहते ‘निर्विरोध’ निर्वाचन कितना औचित्यपूर्ण?

देने का प्रावधान लाने की वकालत करने वालों के लिए तो निर्विरोध चुनाव एक झटके, सदमे से कम नहीं होगा?

नोटा: दंतहीन प्रावधान
‘नोटा’ व वृद्धाश्रम की ‘दशा’ व ‘दिशा’ एक सी ही है। वृद्धाश्रम की आवश्यकता परिवार द्वारा दायित्वों को न निभाने के कारण उत्पन्न



होती है। अतः जब समाज और परिवार अपना दायित्व पूर्ण रूप से निभाने में सक्षम होकर निभाने लग जाएँगा, तब ‘वृद्धाश्रम की सोच’ ही समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार परिपक्व लोकतंत्र में जनता के पास दो विकल्प होते हैं- सत्ता पक्ष व विपक्ष। जहाँ लोकतंत्र परिपक्व नहीं होता है, तब पक्ष-विपक्ष दोनों असफल सिद्ध हो जाने की स्थिति में तभी मजबूरी वश ‘नोटा’ का प्रावधान कर विकल्प दिया जाता है। परन्तु नोटा का प्रयोग होने के बावजूद मतदाता अपने उद्देश्यों में वस्तुतः सफल नहीं हो पाता है। क्योंकि अंततः ‘शासक’ तो दोनों पक्षों में से कोई एक ही बनता है, जिसे न चुनने के लिए नोटा का उपयोग किया गया था। ‘नोटा’ का बहुमत होने की स्थिति में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में उसे ‘शासन का अधिकार’ नहीं मिल जाता है। अतः नोटा में वास्तविक परिणाम को लागू करने वाली शक्ति निहित न होने के कारण, जिस मुद्दे को लेकर नोटा का प्रयोग किया गया है, उसकी प्राप्ति न होने से नोटा का आह्वान करना, व्यावहारिक रूप से उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कहीं से कहीं उचित नहीं उठता है।

जन प्रतिनिधित्व कानून में संशोधन आवश्यक- इस बात पर गहनता से विचार करने की आवश्यकता है कि ‘नोटा’ ‘किन’ उद्देश्यों की

पूर्ति करता है? अथवा उच्चतम न्यायालय ने जिन उद्देश्यों के लिए इसका प्रावधान करने के निर्देश चुनाव आयोग को दिये थे, की क्या पूर्ति हो रही है? यदि ‘नोटा’ को ‘प्रभावी’ बनाया है, तो जन प्रतिनिधित्व कानून में यह संशोधन किया जाना आवश्यक है कि यदि नोटा को अधिकतम वोट मिलते हैं, तो न केवल चुनाव फिर से होना चाहिए, बल्कि जिन भी उम्मीदवारों को नोटा से भी कम मत मिले हैं, उन्हें पुनः खड़े होना का अधिकार नहीं होना चाहिए। यद्यपि समय के साथ ‘नोटा’ की लोकप्रियता बढ़ने के बावजूद अभी तक नोटा ‘बहुमत’ हासिल करने में कामयाब नहीं हुआ है। अधिकतम व बहुमत में अंतर है। साथ ही जीत का अंतर नोटा को मिले मत से कम होने पर पुनः चुनाव होना चाहिए। इस तरह की मांग को लेकर एक जनहित याचिका प्रसिद्ध लेखक व मोटिवेशनल स्पीकर शिव खेड़ा ने उच्चतम न्यायालय में दायर की है, जिस पर चुनाव आयोग ने नोटिस भी जारी कर दिया है। नवम्बर 2018 में महाराष्ट्र व हरियाणा राज्य में स्थानीय निकायों के चुनाव में संशोधन कर अधिकतम वोट मिलने पर फिर से चुनाव होने का प्रावधान किया गया है। आखिर उपरोक्त प्रस्तावित संशोधन की मांग से नुकसान किस बात का है? किसका है?

हमारे देश में संसदीय प्रणाली है, जहां चुने गये विधायक/सांसद, ही कार्यपालिका के माध्यम से ‘शासन’ चलाते हैं। चूँकि नोटा शासक नहीं हो सकता है, अतः आप एक अराजकतावादी स्थिति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यदि आप नोटा’ के समर्थक हैं, तो वही काम तो मत न ड़ालने से भी हो रहा है। अतः जितना कम प्रतिशत मतदान हुआ है, उसको ‘नोटा’ ही माना जाना चाहिए।

मतदाता को यह समझना चाहिए कि यदि आपको कुँआ या खाई, चोर या डाकू में एक किसी एक का चुनाव करना ही है, तब आपने यदि डाकू चुना है, तो वह भविष्य में डाकू से चोर बनने की ओर अग्रसर होगा, ताकि पुनः वह पांच वर्ष के लिए चुना जा सके। और यदि चोर चुना गया है, तो वह ‘साहूकार’ बनने का प्रयास अवश्य करेगा। यदि ऐसा नहीं हो पाता है, तब अटल जी के शब्दों में हर पांच सालों में ‘रोटी’ परत देना चाहिए ताकि रोटी (लोकतंत्र) जल न सके को अपना लेना चाहिए। तभी लोकतंत्र सुरक्षित रह पायेगा। 2018 में मध्य प्रदेश विधानसभा के हुए चुनाव में भाजपा व कांग्रेस के बीच मात्र 0.1 प्रतिशत वोट शेयर का अंतर था, जबकि नोटा का 1.4 प्रतिशत वोट शेयर रहा, जो परिणाम को बदल सकता था।

बात कर सकते हैं जो जादुई रूप से किसी भी साधारण तस्वीर को कला के टुकड़े में बदल देती है? जब उनके पास कुत्ते के कान और उनके सिर पर एक चमकदार प्रभामंडल लगा हो तो उन्हें वास्तव में अपने जैसा दिखने की जरूरत किसे है? आखिरकार, जीवन का दस्तावेजीकरण करने का क्या मतलब है अगर यह आपके सर्वोत्तम आभासी स्व को प्रदर्शित नहीं करता है? आइए ‘स्पष्ट’ फोटो की क्रोनोलॉजी को न भूलें। आप उन्हें जानते हैं- जहां कोई दूर तक देखने या किसी अनदेखे चुटकुले पर हंसने का नाटक करता है। उन्हें कम ही पता है, उनके चतुर साथी ने शटर बटन पर पहले से ही अपनी जाली बुनाते हुए उन्हें इस कृत्य में पकड़ लिया है। ओह, स्पष्ट शॉट का जादू - सावधानीपूर्वक मंचन किया गया और निंजा जैसी सटीकता के साथ निष्पादित किया गया। हमारे भोजन अनुभवों पर कैमरे के प्रभाव के बारे में बात नहीं करेंगे तो कैमरा दुखी हो जाएगा। केवल भोजन का आनंद लेने के बजाय, हमें खाने पर विचार करने से पहले हर कल्पनीय कोण से प्रत्येक व्यंजन की तस्वीर खींचनी होगी। हमारे भोजन का सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण करना महत्वपूर्ण है, अन्यथा हर किसी को कैसे पता चलेगा कि हमने ब्रंच के लिए एवोकैडो टोस्ट खाया था? खाद्य फोटोग्राफी की बात करते हुए, आइए हर भोजन, हर नाश्ते और हर सहज कॉफी ब्रेक का दस्तावेजीकरण करने वाले अंतहीन सोशल मीडिया पोस्ट को न भूलें। हम सभी शौकिया खाद्य आलोकचक और पेशेवर खाद्य फोटोग्राफर बन सकते हैं, पारखी लोगों का एक समाज जो पहले अपने अनुयायियों के लिए फोटो खींचे बिना खाना खाने में असमर्थ है। प्रभावशाली लोगों के उदय के साथ क्या हुआ, वे व्यक्ति जो वास्तव में

एक टीके पर टीका-टिप्पणी

बचपन से ही मुझे डॉक्टर की सुई से बहुत डर लगता था। फिर भी मेरी माँ मुझे कभी बीसीजी, कभी चेचक आदि के टीके लगावाती रहीं। क्या करता छोटा था, अनजान था, मुझे अपनी माँ पर भरोसा अधिक था, टीके पर कभी नहीं रहा,

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सोरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पर जब बड़ा हुआ। समझदार हुआ, तब मुझे जानकारी हुई, तब समझी हुई, कि जो टीके मुझे मेरी माँ ने लगावाये थे, वे सब सही थे, मेरे जीवन रक्षक थे। बचपन में माँ मुझे बहुत लाड़-प्यार करती थीं, लोगों की बुरी नजरों से बचाने के लिए मुझे काजल लगाते वक्त काला टीका मेरे माथे पर लगा दिया करती थीं, कहतीं थीं मेरे लाल को किसी की नजर न लगे और मैं बुरी नजरों से बचा रहता था। वह टीका लेखकों के लिए वरदान सिद्ध होती हैं, जब किसी की टीका से किसी लेखक को प्रसिद्धि मिलती है। और फिर वही प्रसिद्धि उसके धन प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करती है। नेता-मंत्री भी किसी लेखक-कवि की टीका-टिप्पणी का सहारा लेकर प्रसिद्ध होते हैं, सिद्ध होते हैं।

प्रेमी की अच्छी-अच्छी टिकाएँ प्रेमिका के लिए आयरन और पटामिन सी का कार्य करती हैं। पति द्वारा पीटा पर की गई खुशनुमा टीका-टिप्पियां उसे मोहन भोग खिला सकती है। प्यार का झूला झूला सकती है। बहराों फूल बरसा सकती हैं, पर पति की पत्नी पर की गई असभ्य टिकाएँ, पति को पत्नी से उतनी दूर कर सकती है, जितनी दिल्ली की सल्तनत विपक्षियों से दूर है। फिर पति ठंडी-ठंडी आहें भरने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकता?

मंत्री अपने अधीनस्थ अधिकारियों कर्मचारियों पर टिकाएँ कर सकता है- बड़ा साहब छोटे साहब पर टीका-टिप्पणी कर सकता है-छोटा साहब अपने से छोटे कर्मचारियों पर टिका-टिप्पणी कर सकता है। अमीर गरीब पर टिका-टिप्पणी कर सकता है। अर्थशास्त्री अर्थचक्र पर टीका कर सकता है, समाजशास्त्री समाज पर टीका कर सकता। जिला विद्यालय निरीक्षक प्रिंसिपल पर टीका-टिप्पणी कर सकता है, प्रिंसिपल टीचर पर टीका-टिप्पणी कर सकता है, टीचर बच्चों पर टीका-टिप्पणी कर सकता है, पर आजकल जब से यह कोरोना टीका बदनमा हुआ है, तब से यह टीका मुख पर तमाम टिकाएँ करते हुए, मुझे हैरान परेशान कर रहा है। अब मुझे सुई से सपने में भी डर लगता है।

अनपेक्षित प्रफुल्लता होती है। चाहे वह एक रणनीतिक अंगूठा हो, एक नासमझ चेहरा हो, या एक अत्याशित अलमारी की खराबी हो, फोटोबॉम्ब हमेशा गुप्त रहता है, अपनी धूर्त हकतों से आपकी स्थिर तस्वीर को हाईजैक करने के लिए तैयार रहता है। निगरानी और निरंतर दस्तावेजीकरण के इस युग में, हम हमारी हर गतिविधि पर नजर रखने वाले सुरक्षा कैमरों की उपस्थिति के आदी हो गए हैं। यह लगभग वैसा ही है जैसे कि हम सभी अपने रियलिटी टीवी शो के अनजाने सितारे हैं, जो अदृश्य दर्शकों द्वारा चु चुचाप देखे जाने के बावजूद अपना जीवन जी रहे हैं। क्या किसी और को ऐसा लगता है कि वे ‘ट टूमन शो’ में एक भूमिका के लिए लगातार ऑडिशन दे रहे हैं? और आइड्र ड्रोन कोटोग्राफी की बढ़ती तुनिया को नजरअंदाज न करें। इन हवाई कैमरों ने सचमुच ताक-झांक को नई ऊंचाइयों पर पहुँचा दिया है। अब हम केवल जमीन से जीवन का दस्तावेजीकरण करने से संतुष्ट नहीं हैं, अब हमारे पास अपने पड़ोसियों की जासूसी करने या बिना सोचे-समझे धूप सेंकने वालों के गुप्त हवाई शॉट्स लेने की क्षमता है। क्योंकि ऊपर से गुंजते हुए ड्रोन द्वारा निगरानी किए जाने से बेहतर कुछ भी ‘स्वतंत्रता’ नहीं है। कैमरे ने, हमारे आस-पास की दुनिया को कैद करने और साझा करने की अपनी शक्ति के साथ, हमारे जीवन को कई बेतुके और प्रफुल्लित करने वाले तरीकों से बदल दिया है। हालांकि इसने निश्चित रूप से हमें एक-दूसरे के करीब लाया है और हमें अपने अनुभवों का दस्तावेजीकरण करने में सक्षम बनाया है, इसने हमें आत्म-जुनूनी, निगरानी के प्रति जागरूक और अंतहीन तस्वीरें खींचने वाले व्यक्तियों के समाज में भी बदल दिया है। फिर भी कम से कम हमारे पास बूढ़े और झुर्रीदार होने पर देखने के लिए कुछ बेहदारी तस्वीरें होंगी, हे ना?..





3 मई को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस था। पर कुछ गुणी और सुधी मित्रों की ऐसी टिप्पणियाँ दिखीं जिनमे इन दिनों की पत्रकारिता का मखौल उड़ते-उड़ते पत्रकारों का भी उपहास जैसा किया गया लगा । यह एक तो जर्मन कहवत, दास काइंड मिट डेम बडे ऑस्वुटेन (बच्चे को पहलाकर बाहर निकालें, नहाने के पानी के साथ उसे भी न फेंक दें) जैसा है, दूसरे यह देश और समाज के लोकतंत्र को जिंदा रखने में असाधारण जोखिम उठाकर किये जा रहे पत्रकारों के योगदान की अनदेखी करना है। इस बारे में पांच आग्रह हैं।

एक- इस देश के पत्रकार कभी नहीं बिके । जब से प्रेस नाम की संस्था और मीडिया शब्द अस्तित्व में आया है तबसे पत्रकारों ने अपना काम किया है ; निडर, बेबाक और पूरी दमदारी के साथ। ब्रिटिश राज में कंपनी, वायसरायों और उनके मैससी साहबों की लूट और निर्ममता को पत्रकारों ने ही बेनकाब किया था, जिसके नतीजे में पूरी दुनिया और खुद इंग्लैंड की जनता में इस बर्बरता के विरुद्ध भावनाएं भड़कीं और बर्तानिया हुकूमत को तरीके बदलने के लिए विवश कर दिया। ये अनेक थे, ऐसे ही एक पत्रकार का नाम था कार्ल मार्क्स, जिन्होंने 1852 से 1861 के बीच लन्दन की लाइब्रेरी में बैठकर और ब्रिटिश संसद में रखी गयी रिपोर्ट्स के आधार पर अमरीका के अखबार द न्यूयॉर्क डेली ट्रिब्यून के लिए डिस्पैच लिखे। उन्होंने दुनिया के अखबारों के लिए 1857 की लड़ाई को भी कवर किया और उसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम करार दिया। तब का उनका लिखा भारत में उपनिवेशवाद की लूट का आज भी प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता हैं। यह हिंदी में किताब के रूप में भी मौजूद है।

आजादी की लड़ाई के कवरेज और उसके लिए प्रेरणा देने का काम भारत के भीतर भी अनगिनत पत्रकारों ने किया। उनके अखबार जन्म हुए, जुर्माना चुकाने में घर और जायदाद बिक गयी, जेलें काटनी पड़ीं। इनके नाम इतने ज्यादा हैं कि उन्हें गिनाने के लिए जगह कम पड़े जायेगी। युवा भगत सिंह पत्रकार थे, खुद गांधी पत्रकार थे, अम्बेडकर ने अखबार निकाले, नेहरू ने नेशनल हेराल्ड अखबार शुरू किया। नाम और भी हैं अभी सिर्फ एक बाल गंगाधर तिलक का उदाहरण ही ले लें जिन्हें 1891 में अपने अखबार ‘केसरी’ में ‘भारत की दुर्दशा’ लेख लिखने पर 6 साल की सजा हुयी थी। इस सजा के खिलाफ बंबई के 6 लाख मजदूरों ने 6 दिन की प्रतीकात्मक हड़ताल कर ऐसा विरोध जताया था कि दुनिया चकित हो गयी थी। दूर बैठे लेनिन ने भी



अपने 80 वर्षीय जीवनकाल में करीब एक हजार कविताएं, 8 उपन्यास, 8 कहानी संग्रह, 2200 से अधिक गीत तथा विभिन्न विषयों पर अनेक लेख लिखने वाले गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि, उच्च कोटि के साहित्यकार, उपन्यासकार और नाटककार के अलावा संगीत प्रेमी, अच्छे चित्रकार तथा दार्शनिक भी थे। वह विश्व की एकमात्र ऐसी महान् शख्सियत हैं, जिनके लिखे गीतों की छाप तीन देशों के राष्ट्रान में स्पष्ट परिलक्षित है। भारत का राष्ट्रगान ‘जन गण मन अधिनायक’ उन्हीं के द्वारा मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखा गया था जबकि बांग्लादेश का राष्ट्रगान भी उन्हीं के गीत से लिया गया है, जिसमें बांग्लादेश का गुणगान है। इसके अलावा श्रीलंका के राष्ट्रगान का एक हिस्सा भी उनके एक गीत से ही प्रेरित माना गया है। 7 मई 1861 को कोलकाता में साहित्यिक माहौल वाले कुलीन धनाढ्य परिवार में जन्मे रवीन्द्रनाथ टैगोर एशिया के प्रथम ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें वर्ष 1913 में विश्वविख्यात महाकाव्य ‘गीतांजली’ की रचना के लिए साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था। हालांकि उन्होंने यह पुरस्कार स्वयं समारोह में उपस्थित होकर ग्रहण नहीं किया था बल्कि ब्रिटेन के एक राजदूत ने यह पुरस्कार लेकर उन तक



देश का आम चुनाव जहाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए जनविश्वास की चुनौती का बड़ा सवाल है। वहीं दूसरी तरफ विपक्ष की सियासी एकता की अग्निपरीक्षा भी है। आम चुनाव को लेकर देश में शोर की राजनीति है। जनपक्ष से जुड़े जमीनी मुद्दे गायब हैं सिर्फ जुबानी जंग की लड़ाई है। आधुनिक भारत में विज्ञान और विकास के बढ़ते कदम में हम चाँद और सूरज को नाप रहे हैं जबकि राजनीति में हमारी सोच आश्रण, दलित, सम्प्रदाय, जाति, अगड़ा -पिछड़ा, हिन्दू -मुस्लिम से आगे नहीं निकल पा रही। यह आधुनिक भारत और युवापीढ़ी के लिए शर्म की बात है।

फिलहाल राजनीति भी प्रयोगवाद का विज्ञान है लिहाजा प्रयोग लाजमी है। चलिए हम उसी सियासी प्रयोगवाद के अध्ययन की तरफ ले चलते हैं। उत्तर प्रदेश राजनीतिक लिहाज से बड़ा प्रयोग क्षेत्र है। ‘भाजपा का नारा अबकी बार 400 पार’ की असली जमीन उत्तर प्रदेश ही है। इस बार पश्चिम बंगाल की कुशल राजनीतिज्ञ खिलाड़ी ममता बनर्जी इण्डिया गठबंधन के रास्ते नया प्रयोग करना चाहती हैं। वह भदोही लोकसभा सीट के जरिए उत्तर प्रदेश की राजनीति में घुसपैठ करना चाहती हैं। उनकी इस सोच को जमीन देने का काम किया है समाजवादी पार्टी के मुखिया एवं यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने। उन्होंने अपनी सियासी दोस्ती में भदोही जैसी अहम सीट तृणमूल की झोली में डाल दिया

वीथिका

मीडिया की स्वतंत्रता : सारे धान पंसेरी के भाव मत तौलिये

प्रेस की स्वतन्त्रता की हिमायत में औद्योगिक मजदूरों की इस राजनीतिक हड़ताल के महत्व को दर्ज करते हुए उसका अभिनंदन किया था।

आजादी के बाद भारत के पत्रकारों की निर्भीकता और उनकी खोजी पत्रकारिता की मिसाल 75-77 की इमरजेंसी में देखी गयीं। उसके बाद के दौर में, आज भी उनकी क्षमता कायम है। किसान आन्दोलन को उसके लायक जरूरी कवरेज देने के चलते न्यूज़क्लिक पर ताला डला हुआ है और प्रबीर पुष्पायस्थ जेल में हैं, बर्बरां को बर्बर, फासिस्टों को फासिस्ट कहने वाली गौरी लंकेश मारी जा चुकी हैं। राजा का बाजा बजाने से इनकार करने वाले सैकड़ों रवीश, परान्जोय गुहाठकुरता, अभिसार, अजीत अंजुम और पुण्यप्रसून वाजपेई नौकरियों से निकलवा दिए गए हैं।

खड़े खड़े नौकरी से निकलवाना क्या होता है ये अमेठी के दो पत्रकार, इन दिनों स्वयं को राजमहिषी मान बैठी सता पार्टी की नेत्री से सवाल पूछने की हिमाकत करके देख चुके हैं। अखबार के मालिक इते डरे कि अपने इन दोनों पत्रकारों का अस्तित्व तक मानने से इनकार कर दिया।

यह दशा सिर्फ वामपंथी या जिन्हें संघी कुनबा प्यार से सिकुलर कहता है उस विचार को मानने वाले पत्रकारों भर की नहीं है, उनकी ज्यादा है। मगर दक्षिणपंथ में विश्वास करने वाले ‘पत्रकार’ भी इस विपदा से बचे नहीं है। उनमे से कुछ के नाम लिए जा सकते हैं हैं मगर इससे उनका बचा खुचा ‘भविष्य’ भी खराब होने की आशंका है, इसलिए फिलहाल छोड़िये ।

मतलब यह कि पत्रकारों को कोसने से या उनका मजाक बनाने की बजाय पत्रकार मानने की कसौटी को जाँचा जाना चाहिए। यह सारे धान पंसेरी के भाव तौलने का मसला नहीं है, यह जिन्हें धान मानकर तौला जा रहा है वह धान है भी कि नहीं यह पहचानने का मामला है। चंद नामजद बंदे बर्दियां खुद को पत्रकार कहते हैं और उन जैसा काम करते दिखते हैं इसलिए वे पत्रकार नहीं हो जाते। वे चारण और भाट और चीखाओं की किस्म हैं और यह प्रजाति हमेशा रही है। यह समय खटा पुलटा समय है, इसलिए इन दिनों इनका बसंत आया हुआ लगता है । मगर चांदी के कितने भी बर्क लगा लेने से कीच चन्दन नहीं हो जाता। लिहाजा इन्हें पत्रकार मानकर समूची पत्रकार बिरादरी को धिक्कारा जाना शुरुआत ही गलती से करना होगा।

दो- आज भी पत्रकार हैं और अपनी जान दांव पर लगाकर, कई तो जान गंवाकर भी पत्रकारिता को बचाए हुए हैं !! नवउदारीकरण के हावी होने के बाद से ही प्रेस

की भूमिका में बदलाव आया है। उसमे असहमति, विरोध और तार्किक तथ्यपरक विश्लेषण घटे हैं । सत्य की हाजिरी भी घटी है। मोदी काल के दस वर्ष - बाकी सबके साथ प्रेस और मीडिया के लिए बेहद घुटन - जो हुआ है उसके अनुपात में घुटन एक छोटा शब्द है - वाले रहे हैं। दबाव, धमकी, गिरफ्तारी और संस्थान की तालाबंदी से लेकर बात इस सबके बावजूद समर्पण न करने वाले पत्रकारों की हत्याओं तक जा पहुंची है। प्रबीर और गौरी लंकेश का जिक्र पहले किया जा चुका है - मगर वे अकेले नहीं हैं। अनेक हैं उनके जैसे जिनकी चर्चा कम ही हुई है।

‘इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट्स’ ‘कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स’ ‘रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स’ सहित



अन्य प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा दुनिया भर के देशों में प्रेस की दशा का आंकलन कर विश्व स्वतंत्रता सूचकांक तैयार किया जाता है। इनकी रिपोर्ट के अनुसार भारत में पत्रकारों की हत्या और उन पर दमन तालिबानी राज में अफगानिस्तान में पत्रकारों पर हुए दमन से भी ज्यादा है। यही वजह है कि प्रेस स्वतन्त्रता सूचकांक में भारत 2023 में 180 देशों में 161 वे नम्बर पर था । यह अत्यंत खतरनाक स्थिति है, इसलिए और अधिक खतरनाक कि पिछली वर्ष की रैंक 150 से यह एक ही वर्ष में 11 की छलांग लगाकर और नीचे गयी है । जो नीचे गया वह पत्रकार नहीं है- कारपोरेट नियंत्रित मीडिया है ।

तीन- पत्रकार और प्रेस/मीडिया के मालिक दो अलग अलग, एकदम अलग अलग, गुणात्मक रूप से भिन्न चीजें हैं । उन्हें गड़ु मड़ु करने पर गलत नतीजे पर पहुंचेंगे ही । बीन मालिक की है। स्वरलिपि वही लिखता है जाहिर है कि बेसुरेपन का दोषी भी वही होगा । पत्रकार या मीडिया पर्सन, भले कितना बड़ा और नामी क्यों नही हो, कवरेज और उसकी प्रस्तुति का निर्णय

नहीं करता । यह फैसला वे करते हैं जो पत्रकारिता का ‘प’ तक नहीं जाते अलबत्ता मुनाफे की भाषा, वर्तनी, व्याकरण और सबसे बहुकर गणित खूब अच्छी तरह जानते हैं । ऐसा आज से नहीं है, आज कुछ ज्यादा है, मगर ऐसा हमेशा से है । 1886 के शिकागो और अमरीका के कुछ खास अखबारों में मई दिवस के शहीदों की ट्रायल का कवरेज देख लीजिये । एक अखबार है जिसके सेठ ने आज से नहीं जब से उसने पड़ोसी राज्य से अखबार का धंधा शुरू किया है तबसे अपने पत्रकारों को स्टैंडिंग इंस्ट्रक्शन दिया हुआ है कि उनके अखबार में लेफ्ट-वेफ्ट, मजदूर वजदूर, कामरेड वामरेड और लाल झंडा दिखना नहीं चाइये !! अब यह ‘नहीं चाइये’ थोड़ा और आगे बढ़ गया है ।

लुब्बोलुबाब ये है कि पत्रकार की जो थोड़ी बहुत दिखावटी आजादी थी भी वह खत्म हो चुकी है। अब जो भी है वह धनकुबेर है - मीडिया उसका धंधा है, अखबार और चैनल धंधा चमकाने, अपने धंधे के अपराध छुपाने और राजनेताओं से साझेदारी कर और अधिक माल कमाने का औजार है। इस वर्ष की शुरुआत में अम्बानी का रिलायंस समूह 72 टीवी चैनल्स का मालिक था, इस वर्ष में यह संख्या 100 होने वाली है। एन डी टी वी के अधिग्रहण के बाद अडानी समूह भी इस धंधे में कूद चुका है । जो इनके स्वामित्व में नहीं हैं उनमे भी इनका पैसा लगा हुआ है और ये उसके सम्पादकीय रुझान। कवरेज और कटौत को निर्धारित करते हैं। नतीजा यह है कि सच गायब हो गया है, सच की पत्रकारिता करने वाले पत्रकारों का जीना मुहाल हो गया है।

चार- इसकी शुरुआत हुयी सम्पादक नाम की संस्था - जो कभी सर्वोपरि हुआ करती थी - के खात्मे के साथ। सम्पादक मतलब खबर के लिए लड़ जाने, संवाददाता और पत्रकार के लिए अड़ जाने वाला कसान !! सच्ची घटना है कि एक मुख्यमंत्री ने एक अंग्रेजी अखबार के सम्पादक से कहा था कि वह अपना ब्यूरो चीफ बदल दे। उस सम्पादक ने उस ब्यूरो चीफ की तनखा बढ़ाकर उसे पांच साल और उसी जगह रहने का पत्र जारी कर दिया । अब इस तरह के सम्पादक नहीं रखे जाते। जो रखे जाते हैं वे इस तरह के नहीं हों यह पक्का करने के बाद ही रखे जाते हैं। यह प्रजाति ही लुप्त हो गयी है।

जो सुधी जन नोस्ट्राल्जिया में जी रहे हैं और राहुल बारपुते, राजेन्द्र माथुर, वार्गीज, कुलदीप नैय्यर, एन राम यहाँ तक कि अरुण शौरी की याद में दुबले हुए जा रहे हैं वे भूल रहे हैं कि इन जैसा होने के लिए बाबू

मानवीय एकता का सार समझाते रवीन्द्रनाथ टैगोर

1905 में बांग्ला

में एक गीत लिखा था,
आमार शोनार बांग्ला,
आमि तोमाएं भालोबाशी।
चिरोंदिन तोमार आकाश,
तोमार बताशा,
आमार प्राने बजाएं बाशी।

इसका अर्थ है कि मेरा सोने जैसा बंगाल, मैं तुमसे प्यार करता हूं। सदैव तुम्हारा आकाश, तुम्हारी वायु, मेरे प्राणों में बांसुरी सी बजाती है। हालांकि जिस समय उन्होंने इस गीत की रचना की थी, उस समय उन्होंने स्वयं कल्पना तक नहीं की होगी कि करीब 66 वर्षों बाद बांग्लादेश अस्तित्व में आएगा और उनका यही गीत उसका राष्ट्रगान बन जाएगा। उनकी कुछ कविताएं तो बांग्लादेश के स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा भी हैं। जहां तक भारत के राष्ट्रीय गीत ‘जन गण मन’ की बात है कि इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के दूसरे दिन का काम शुरू होने से पहले 27 दिसम्बर 1911 को पहली बार गाया गया था। हालांकि उस दौरान इस बात को लेकर भी कुछ विवाद चला कि कहीं उन्होंने यह गीत अंग्रेजों की प्रशंसा में तो नहीं लिखा लेकिन इसके रचयिता टैगोर ने स्पष्ट करते हुए कहा था कि इस गीत में वर्णित ‘भारत भाग्य विधाता’ के केवल दो ही अर्थ हो सकते हैं, देश की जनता या फिर

सर्वशक्तिमान ऊपर वाला, फिर चाहे उसे भगवान कहें या देव। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा रवीन्द्र नाथ टैगोर राष्ट्रीयता, देशभक्ति, तर्कशक्ति इत्यादि विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग राय रखते थे लेकिन दोनों एक-दूसरे का बहुत सम्मान भी किया करते थे। साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद टैगोर को गांधीजी ने ही सर्वप्रथम ‘गुरुदेव’ कहा था जबकि गांधीजी को महात्मा की उपाधि टैगोर ने दी थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मात्र आठ वर्ष की आयु में अपनी पहली कविता लिखी थी और 16 वर्ष की आयु में कहानियां तथा नाटक लिखना शुरू कर दिया था। बैरिस्टर बनने के सपने के साथ वह 1878 में इंग्लैंड चले गए थे लेकिन दो ही वर्ष बाद डिग्री लिए बिना ही भारत लौट आए। 1901 में सियालदह छोड़कर पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शांतिनिकेतन में आने के बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वहां प्रकृति की गोद में खुले प्राकृतिक वातावरण में वृक्षों, बगीचों और एक लाइब्रेरी के साथ केवल पांच छात्रों के साथ छोटे से ‘शांतिनिकेतन स्कूल’ की स्थापना की, जो 1921 में ‘विश्वभारती’ नाम से एक समृद्ध विश्वविद्यालय बना। 1919 में उन्होंने शांतिनिकेतन कला के एक स्कूल ‘कला भवन’ की भी नींव रखी, जो दो साल बाद विश्वभारती विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया। शांतिनिकेतन में ही गुरुदेव ने अपनी कई साहित्यिक कृतियां लिखी और यहां मौजूद

उनका घर आज भी ऐतिहासिक महत्व का है।

कविता, गान, उपन्यास, कथा, नाटक, प्रबंध, शिल्पकला इत्यादि साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा है, जिसमें उनकी रचना न हो। उनकी प्रमुख रचनाओं में गीतांजली, गीताली, गीतिमाल्य, कथा ओ कहानी, शिशु, शिशु भोलानाथ, कणिका, क्षणिका, खेया हैमाति, क्षुदित्ता, मुसलमार्गिर गोल्पो आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कई किताबों का अनुवाद अंग्रेजी में किया, जिसके बाद उनकी रचनाएं पूरी दुनिया में पढ़ी और सराही गईं। उपन्यास में गोरा, चतुरंगा, नौकादुबी, जंगजोश, घारे बायर, मुझे वापसी, अंतिम प्यार, अनाथ इत्यादि गुरुदेव के कुछ प्रमुख उपन्यास हैं। इनके अलावा काबुलीवाला, मास्टर साहब, पोस्टमास्टर इत्यादि उनकी कई कहानियों को भी बेहद पसंद किया गया। अपने जीवनकाल में गुरुदेव ने करीब 2230 गीतों की रचना की और बांग्ला साहित्य के जरिये भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान डाली। अपनी अधिकांश रचनाओं में उन्होंने ईसान और भगवान के बीच के संबंधों तथा भावनाओं को उजागर किया। मानवता को राष्ट्रवाद से बड़ा मानने वाले गुरुदेव ने कहा था कि जब तक मैं जिंदा हूं, मानवता के ऊपर देशभक्ति की जीत नहीं होने दूंगा। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रोस्टेट कैंसर के कारण 7 अगस्त 1941 को कोलकाता में अंतिम सांस ली।

पश्चिम बंगाल से उत्तर प्रदेश को साधना चाहती हैं ममता ?

है। ममता दीदी इस प्रयोग में कितनी सफल होंगी यह वक्त बताएगा।

ममता बनर्जी इस प्रयोगवाद के जरिए भाषाई राजनीति से अलग हटकर उत्तर भारत के सबसे बड़े हिंदी भाषी क्षेत्र में अपनी उपस्थित दर्ज करना चाहती हैं। अगर इण्डिया गठबंधन के जरिए यह प्रयोग सफल रहा तो वह इसी रास्ते हिंदी भूभाग पर राजनैतिक विस्तारवाद की फसल उगाएंगी। उनके इस सफर के सबसे अहम साथी यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव होंगे। मोदी बनाम विपक्ष की इस सियासी दोस्ती में दीदी को अखलेश यादव जैसा एक मजबूत सियासी दोस्त मिला है। दीदी के लिए उन्होंने बड़ा दिल दिखाया है। सपा यूपी में 63 जबकि कांग्रेस 17 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

ममता और अखिलेश यादव के बीच हुए इस समझौते में मीडिया में यह बात भी आयी थीं कि अखिलेश यादव पश्चिम बंगाल में समाजवादी पार्टी के उपाध्यय किरणमय नंदा के लिए दक्षिण कोलकाता की सीट चाहते थे। क्योंकि यहाँ पूर्वांचल के आजमगढ़, गाजीपुर और चंदौली जिले के मतदाता काफी संख्या में रहते हैं। जिससे सपा वहां अपनी पैठ जमा सकती है। अब यह समझौता हुआ या नहीं कहना मुश्किल है। सपा यूपी में 35 साल तक विधायक रहे। वह वाममोर्चा सरकार में 30 साल तक मंत्री रहे। वे समाजवादी विचारधारा के पोषक रहे जिसकी वजह से वे मुलामय सिंह यादव के करीब आए और परिवार में सियासी उठापटक के दौरान वे अखिलेश यादव के साथ मजबूती से खड़े रहे। जिसकी वजह से वह अखिलेश यादव के करीबी बन

गए। नंदा की वजह से ही समाजवादी पार्टी का अधिवेशन कोलकाता में हुआ था। बंगाल में वह समाजवादी पार्टी को खड़ा करना चाहते हैं।

फिरहाल अखिलेश यादव ने ममता दीदी के लिए बड़ा दिल दिखाया और उन्हें भदोही सीट मिल गई है। हालांकि अखलेश यादव के इस फैसले से पार्टी के बड़े नेता



आंतरिक तौर पर खुश नहीं होंगे। लेकिन भदोही के समाजवादी पार्टी के विधायक जाहिद जमाल बेग बातचीत के दौरान इस बात से इनकार किया था। फिलहाल बीमारी की वजह से वे अस्पताल में हैं। यहाँ से ममता ने उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रहे पंडित कमलापति के प्रौत्र ललितेश पति त्रिपाठी को चुनावी

मैदान में उतारा है।

ललितेशपति का परिवार खानदानी तौर पर कांग्रेस कल्चर से रहा है। ललितेश भी कभी गाँधी परिवार के बेहद करीबी माने जाते रहे। वे कांग्रेस से मिर्जापुर की मंडिहान विधानसभा से 2012 में विधायक चुने गए। मिर्जापुर उनके परिवार की सियासी कर्मस्थली रही है। उनके दादा लोकपति त्रिपाठी का यह कर्म क्षेत्र रहा है। ललितेश कभी प्रियंका गाँधी के बेहद खस रहे। लेकिन राजनीति में सबकुछ चलता है। किसी बात से नाराज होकर 2021 में कांग्रेस छोड़कर तृणमूल की शरण में चले गए। अब ममता ने उन्हें भदोही से उम्मीदवार बनाया है।

पश्चिम बंगाल में इण्डिया गठबंधन का कोई मतलब नहीं है वहां कांग्रेस और ममता एक दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। ममता दीदी भदोही में ललितेश को चुनावी मैदान में उतार कर सोची समझी रणनीति का परिचय दिया है। उन्होंने कांग्रेस को जहाँ जमीन दिखाई है वहीं एक ब्राह्मण चेहरा उतार कर एक नई सियासत का आगाज किया है। ललितेश कभी कांग्रेस के वफादार सिपाही थे। उनका पूरा खानदान कांग्रेस कल्चर का है लेकिन कांग्रेस से बड़ा उक्राए गए तो दीदी ने गले लगाया। ममता का दांव कांग्रेस के लिए एक सबक भी है।

दूसरी बात ललितेश एक ब्राह्मण चेहरा हैं। ममता भी ब्राह्मण हैं। भदोही में ब्राह्मण वोटर सबसे अधिक हैं। 2014 के बाद ब्राह्मण भाजपा की झोली में चला गया है। जबकि पश्चिम बंगाल में भाजपा यानी मोदी और

ममता की सियासी दुश्मनी जगजाहिर है। इसलिए उन्होंने पूर्वांचल के सियासी दिग्गज परिवार के युवा उमीदवार को उतार कर भजपा के वोट में संभार अपना सियासी दाँव को सफल करना चाहती हैं। क्योंकि भदोही प्रधामंत्री मोदी की वाराणसी संसदीय सीट की पड़ोसी सीट है। ममता का चुनावी दाँव अगर सफल हो जाता है तो यह मोदी के लिए भी चुनौती होगी।

दूसरी तरफ भदोही समाजवादी और भजपा की टक्कर वाली सीट है। यहाँ ब्राह्मण, बिंद के बाद मुस्लिम और यादव अच्छी तादात में हैं। भाजपा बंगाल में ममता पर हिन्दु विरोधी होने का आरोप लगाती है। उन्हें बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों और मुस्लिमों का सबसे बड़ा हितचिंतक बताती है। जिसका लाभ ममता को भदोही में मिलेगा। क्योंकि एमवाई यानी मुस्लिम और यादव अखिलेश यादव का बेहद करीबी है। ममता और अखिलेश यादव के राजनीतिक विचारधारा में समानता है जिसका लाभ तृणमूल को मिलेगा।

भदोही का ब्राह्मण अगर हिंदुत्व और राष्ट्रवाद को किनारे कर ब्रह्मणवाद के लिए शंख बजा दिया तो यहाँ ममता और अखलेश यादव की सियासी दोस्ती गुल खिला सकती है। ममता दीदी को भदोही के रास्ते उत्तर प्रदेश की राजनीति में पाँव फैलाने का अच्छ ख़ासा मार्ग मिल जाएगा। फिलहाल मोदी बनाम विपक्ष की इस लड़ाई में ममता की सियासी गुगली कितनी सफल होती है या समय बताएगा। लेकिन मोदी और अखिलेश की दोस्ती एवं सियासी समझौते को हल्के में लेना भाजपा की बड़ी भूल होगी।

आरडी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन की पहल पर 173 युवाओं को मिलेगा रोजगार

आर.डी.पब्लिक स्कूल में आयोजित मेगा रिक्रूटमेंट ड्राइव में हुआ चयन



बैतूल। आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले में क्रांति एजुकेशन देने के साथ ही बच्चों को काम्प्यूटिंग एजमा की तैयारी करवाकर मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रबंधन सहित अन्य क्षेत्रों में रोजगार की राह दिखाने वाले आरडी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन द्वारा जिले के युवाओं

को रोजगार दिलाने की ठोस पहल कर सामाजिक सरोकार की अनूठी मिशाल पेश की है। आरडी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल की पहल पर आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में आयोजित रिक्रूटमेंट ड्राइव में 20 से अधिक कम्पनियों ने सहभागिता कर निर्धारित मापदण्डों के आधार पर बैतूल जिले के 173 युवाओं का आत्मनिर्भरता का सपना साकार कर विभिन्न पदों पर उनका चयन किया है। जानकारों की माने तो सम्भवतः बैतूल जिले में यह पहला मौका है जब किसी निजी शैक्षणिक संस्थान ने रिक्रूटमेंट ड्राइव का आयोजन कर युवाओं के रोजगार का सपना साकार किया है। मेगा रिक्रूटमेंट ड्राइव में शामिल हुई 20 से अधिक कम्पनियों के प्रतिनिधियों के साथ ही चयनित युवाओं ने आरडी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल के सामाजिक सरोकार से जुड़ी इस पहल को सराहनीय और अनुकरणीय बताकर उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया है।

आरडी ग्रुप ने की रोजगार दिलाने की ठोस पहल- आरडी रूप ऑफ इंस्टीट्यूशन की डायरेक्टर द्वारा जिले के युवाओं को उनकी दक्षता और क्षमता के मुताबिक रोजगार दिलवाने के लिए ठोस पहल करते हुए आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में अपने स्तर पर मेगा रिक्रूटमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। मेगा रिक्रूटमेंट ड्राइव में 20 से अधिक कम्पनियों शामिल हुई। कम्पनियों के प्रतिनिधियों द्वारा लगभग 814 अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया। कम्पनियों के विशेषज्ञों द्वारा साक्षात्कार में योग्यता के आधार पर विभिन्न पदों के लिए 173 युवाओं का चयन कर उनके आत्मनिर्भरता के सपने को साकार किया।

ये कम्पनियां हुई शामिल- आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में आयोजित रिक्रूटमेंट ड्राइव में शारदा फावरवर् इंडस्ट्री कोसमी, सत्कार टोयटा, एक्वीटास स्मॉल फायनेंस बैंक, जीविसा हर्बल कोसमी, इफको टोकियो, एलआईसी, एक्सिस बैंक, कपूर एण्ड संस, महिन्द्र स्कॉड मोटर्स, मारुति सुजुकी कामठी मोटर्स, एसाफ बैंक, बैतूल बाँयो फ्यूल, अनंत स्पेसिंग मील मण्डीदीप, आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल, एयू स्मॉल बैंक, एसबीआई बैंक सहित अन्य कम्पनियों ने शामिल होकर पोस्ट ग्रेजुएट, ग्रेजुएट, पॉलीटेक्निक, आईटीआई की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर विभिन्न पदों के लिए युवाओं का चयन किया। इस केम्पस ड्राइव में अधिकतम पैकेज 3 लाख 25 हजार रूपए के ऑफर पर रिक्रूटमेंट हुआ। मेगा रिक्रूटमेंट ड्राइव में शामिल कम्पनियों के प्रतिनिधियों एवं चयनित युवाओं ने स्थानीय स्तर पर रोजगार की उपलब्धता के लिए की गई पहल के लिए आरडी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल को धन्यवाद ज्ञापित कर भविष्य में भी रिक्रूटमेंट ड्राइव एवं स्किल डेवेलपमेंट ट्रेनिंग आयोजित करने की अपेक्षा की।

रामायण के अंदर प्रवेश करने पर होता है रहस्यों का प्राकट्यः पं. निर्मल कुमार शुक्ल

बैतूल। रामायण की कथा अलौकिक है, मात्र जो दिखता है वही सत्य नहीं है। रामायण के अंदर प्रवेश करने पर रहस्यों का प्राकट्य होता है। यह सारा संसार भगवान का बनाया हुआ है, इसीलिए इसमें मनुष्य को कैसा रहना चाहिए यह संस्कार भी भगवान ही देते हैं, इसीलिए स्वयं अपने परिजनों के साथ संसार में आकर हमारा चारित्रिक मार्गदर्शन भी करते हैं। जिला पंचायत सदस्य राजा ठाकुर के आवास टॉवर वार्ड में राम कथा के अष्टम दिवस मानस महारथी पं.निर्मल कुमार शुक्ल ने राम रावण के चरित्र का एक अलग ही निरूपण किया। उन्होंने कहा कि रावण और राम दोनों एक ही जगह से आए हैं जैसे आजकल रामलीला मंडलियां आती हैं, लेकिन उनके सारे पात्र एक ही गांव के होते



हैं और आपस में संबंधी भी होते हैं किन्तु यहां आकर शत्रु मित्र आदि आदि भूमिकाओं का निर्वाह करते हैं। ठीक उसी प्रकार रावण राम दोनों का आगमन एक ही वैकुंठ लोक से हुआ है। रावण कुंभकर्ण दोनों भाई पूर्व काल में वैकुंठ में भगवान के परम प्रिय पहरेदार थे। एक बार सनकादि ऋषियों ने इन्हें राक्षस होने का शाप दे दिया और यह हिरण्यकशिपु तथा हिरण्यशक बन कर राक्षस योनि में पैदा हुए। भगवान ने वाराह और नृसिंह अवतार लेकर उन दोनों का उद्धार किया। दूसरी बार दोनों रावण कुंभकर्ण बने, अबकी बार भगवान ने रामावतार लेकर इनका उद्धार किया। जब भगवान राम के हाथों खर दूषण का वध हुआ यह सुनकर राक्षस को विश्वास हो गया कि परमात्मा का अवतार हो चुका है, मेरे मोक्ष का समय नजदीक आ गया। इसी उद्देश्य से रावण ने सीता जी का हरण किया। रावण को सीता वापस करने के लिए 22 लोगों ने समझाया किंतु उसने किसी की बात नहीं मानी। अंत में मंदोदरी ने समझाया कि राम से बैर मत करो सीता के कारण लंका का सर्वनाश हो जाएगा। सूरदास जी ने रामचरितमाटी में कहा कि रावण मंदोदरी को समझाते हुए कहता है कि प्रिये मैं सीता को नहीं लौटाऊंगा। यह सीता मुझे भवसागर पार होने के लिए नौका के रूप में मिली है अपने हाथों इस नौका का विनाश नहीं करूंगा।



थम गया चुनावी शोर, आज ईवीएम में बंद होगा प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला



संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में आज सोमवार को मतदान दलों को अपने गंतव्य के लिए रवाना किया गया। आज मंगलवार 7 मई को होने वाले बैतूल-हरदा-हरसूद लोकसभा चुनाव के लिए बैतूल जिले की सभी विधानसभा के पोलिंग बूथों के लिए मतदान दल अपने मतदान केंद्रों के लिए आज सोमवार को रवाना हो गए। मंगलवार 7 मई को लोकसभा चुनाव के लिए होने वाली वोटिंग हेतु रवाना करते समय इन

मतदान दलों को उपस्थित अधिकारियों ने गाजे-बाजे के साथ मतदान सामग्री के साथ-साथ पुष्प गुच्छ देकर रवाना किया।

जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में खोले गए स्ट्रांग रूम

मतदान दल, मतदान सामग्री के साथ गंतव्य को हुए रवाना

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के मतदान दिवस के पूर्व मतदान दलों को मतदान सामग्री का वितरण किया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी की उपस्थिति में बैतूल विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत स्थित मतदान केन्द्रों के दलों को रवाना किया गया। सोमवार प्रातः 7 बजे से मतदान कर्मी मतदान सामग्री के लिए जेएच कॉलेज परिसर में उपस्थित होना शुरू हो गए थे। एसडीएम राजीव कहार एवं तहसीलदार भी पाटे द्वारा जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में स्ट्रांग रूम खोले गए।

एसडीएम राजीव कहार ने सर्वप्रथम जन प्रतिनिधियों को बंद स्ट्रांग रूम का निरीक्षण कराया। दल प्रतिनिधियों की संतुष्टि के पश्चात स्ट्रांग रूम खोले गए। इसके बाद दल प्रतिनिधियों को स्ट्रांग रूम में रखी ईवीएम के निरीक्षण के लिए ले जाया गया। उनके अवलोकन के बाद मतदान स्ट्रांग रूम बंद कराए गए। मतदान के लिए ग्राउंड परिसर में सेक्टर के अनुसार व्यवस्थित वितरण व्यवस्था की गई थी। मतदान दलों के लिए परिवहन व्यवस्था के साथ सुव्यवस्थित सुरक्षा बल तैनात थे। मतदान सामग्री में ईवीएम के साथ बैलेट यूनिट और सीयू (कंट्रोल यूनिट) व्हीव्हीपेंट मशीनों को सील करने के लिए ग्रीन पेपर सील, पिंग पेपर सील, 20-20 निवदित मतपत्र, मतदान करने वाली निर्वाचन पंजी एवं अन्य पत्र शामिल थे। मतदान दल विभिन्न सेक्टरों के लिए बस से रवाना हुए। बैतूल के 32 सेक्टरों में 297 मतदान केन्द्रों के लिए 92 बसे अधिग्रहित कर संबद्ध की गई।

शहर की यातायात व्यवस्था ध्वस्त, लगा लंबा जाम एम्बुलेंस भी फंसी



बैतूल। कोठी बाजार कमानी गेट के पास साप्ताहिक बाजार के दिन हमेशा जाम की स्थिति बनी रहती है। आज रविवार को भी शाम 6: 00 बजे लंबा

जाम लग गया। सैकड़ों वाहन जाम में फंसे रहे। जाम में एंबुलेंस भी फंस गई थी। कड़ी मशकत के बाद एंबुलेंस को जाम से बाहर निकाला गया। जानकारी

के अनुसार शाम 6 बजे जाम लग गया। साप्ताहिक बाजार होने के बावजूद भी कई बड़े वाहन प्रवेश कर गए थे। जिसके कारण जाम की स्थिति निर्मित हो गई। रानीपुर मार्ग पर भी लगभग 1 किलोमीटर तक वाहनों की लंबी कतार लग गई तो इधर गणेश चौक तक सड़क पर वाहनों की कतार लगी थी। लगभग 2 घंटे तक सैकड़ों वहां जाम में फंसे रहे। रानीपुर तरफ से आ रही एंबुलेंस जाम में फंस गई है। अधिकतर देखने में आता है कि यहां साप्ताहिक बाजार के दिन कई बार एंबुलेंस से भी जाम में फंस जाती है। यहां यातायात व्यवस्था सुधारने का नाम नहीं ले रही है। क्या पुलिसकर्मी मौजूद होने के बाद भी जाम लग जाता है।

सर्ग में मतदान नहीं कर पाई 100 वर्षीय बुजुर्ग मतदाता देवकी लकवाग्रस्त दो बुजुर्गों के पास भी नहीं पहुंचा मतदान दल, ग्राम पंचायत के 85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों को नहीं मिल पाई घर पर मतदान सुविधा

बैतूल। जिले की मुलताई तहसील के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत सर्ग में बुजुर्ग, बीमार एवं निशक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग शासन की घर में मतदान की सुविधा के तहत नहीं कर पाये। जिले की बात करें तो निर्वाचन अधिकारी एवं प्रशासनिक व्यवस्था के चलते दो चरणों में 96 प्रतिशत बुजुर्गों ने घर पर ही मतदान कर लोकतंत्र के महापर्व में अपनी जिम्मेदारी सुनिश्चित की लेकिन बात जब सर्ग ग्राम पंचायत की आती है तो यहां उक्त श्रेणी के मतदाताओं में से एक भी मतदाता का मतदान न कर पाना बीएलओ की कार्यशैली पर सवाल उठाता है। इस संबंध में ग्राम पंचायत सर्ग के सरपंच तुलाराम सूर्यवंशी ने कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी से भी शिकायत की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जो बुजुर्ग मतदाता मतदान नहीं कर पाये है उनमें तीन बुजुर्ग लकवाग्रस्त हैं जिनकी उम्र 81, 71 और 86 वर्ष है, निशक बुजुर्गों की सुविधा से वंचित किया गया है। सरपंच श्री सूर्यवंशी का आरोप है कि दवांग एवं अपराधिक प्रवृत्ति के शिक्षक बीएलओ की दबांगई से पूरा गांव परेशान है। उन्होंने आशंका जताई कि बीएलओ 7 मई को होने वाले मतदान को भी प्रभावित कर सकत है इसी के तहत उन्होंने कलेक्टर से उचित कार्रवाई की मांग की है।

मतदान केन्द्रों तक पहुंचने में असमर्थ है बुजुर्ग- सरपंच तुलाराम सूर्यवंशी ने शिकायत में बताया कि ग्राम पंचायत में 22 बुजुर्ग ऐसे है जो या तो अस्वस्थ है या जिनकी उम्र इतनी अधिक है कि वे मतदान केन्द्र तक नहीं पहुंच पाएंगे। ऐसे में आशंका यह है कि 22 मतदाता अपने मतदान के अधिकार से वंचित रह जाएंगे। उक्त 22

बुजुर्गों में एक दर्जन बुजुर्ग निर्वाचन आयोग के मापदंडों के अनुसार घर पर ही मतदान के पात्र थे लेकिन बीएलओ की लापरवाही से मतदान नहीं कर पाये। उन्होंने आरोप लगाया कि ग्राम पंचायत सर्ग में बीएलओ धर्मराज पिता गौरीशंकर गढ़ेकर द्वारा निर्वाचन आयोग के नियमों एवं दिशा निर्देशों का मखौल उड़या जा रहा है। बीएलओ धर्मराज ने अपनी मनमानी करते हुए उक्त पात्र मतदाताओं का मतदान घर पर नहीं होने दिया। बीएलओ ग्राम पंचायत सर्ग का ही निवासी है तथा इनकी पोस्टिंग भी गृह ग्राम में ही है। पूर्व में भी बीएलओ धर्मराज पंचायत चुनाव एवं विधानसभा चुनाव में अपनी दबांगई दिखाते हुए चुनाव को प्रभावित करने की हरकतें कर चुके है। इसी से आशंकित होकर सरपंच द्वारा शिकायत कर बीएलओ के अन्यत्र स्थानांतरण एवं चुनाव प्रक्रिया निर्विरोध एवं निष्पक्ष कराने की मांग की है।

बीएलओ का कहना मात्र तीन बुजुर्ग 85 प्लस, मतदान केन्द्र पर करेंगे मतदान- बीएलओ धर्मराज की माने तो उनके अधिकार क्षेत्र में मात्र तीन ही बुजुर्ग 85 प्लस है। जिनमें से एक मतदाता सरस्वती बाई का निधन हो चुका है जबकि देवकी बाई जिनकी उम्र 100 वर्ष है उन्होंने घर पर मतदान करने से मना कर दिया। ऐसे में बीएलओ ने देवकी बाई एवं एक अन्य बुजुर्ग की पावती लेकर वरिष्ठ अधिकारियों के पास जमा कराई। इधर सरपंच तुलाराम सूर्यवंशी ने जिन 22 निशक एवं अधिक उम्र के बुजुर्ग मतदाता की सूची कलेक्टर को सीपी है उनमें सखाराम पिता सालकराम 87 वर्ष,

जगन पिता शोभाचंद 91 वर्ष, कपूरचंद पिता मौजी नरवरे 86 वर्ष, सालकराम पिता शोभाचंद 94 वर्ष, पूरन पिता रूपचंद 89 वर्ष, देवकी पति लालचंद 100 वर्ष, पन्नालाल पिता भिखू 88 वर्ष, गया पति भूमा 85 वर्ष शामिल है। इसके अलावा तीन बुजुर्ग इस सूची में ऐसे भी है जो लकवाग्रस्त है और चलने में असमर्थ है। सरपंच का आरोप है कि मतदान दल निशक एवं बुजुर्ग मतदाताओं के बीच पहुंचा हीं नहीं। बीएलओ द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को भूमित करने के भी आरोप लगाए गए है। बहरहाल ग्राम पंचायत सर्ग में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान के साथ जो बुजुर्ग एवं निशक घर पर मतदान नहीं कर पाये उनके लिए सुविधाजनक मतदान की व्यवस्था बनाए जाने एवं बीएलओ के विरुद्ध कार्रवाई की मांग सरपंच ने कलेक्टर से की है।

इनका कहना-

मतदान दलों द्वारा घर-घर फार्म पहुंचाए गए। अकेले बीएलओ के नियंत्रण में यह प्रक्रिया नहीं है। बुजुर्गों एवं निशकों के मतदान के दौरान राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, ग्रामीण, प्रशासन की टीम मौजूद रहती है। निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर, निर्वाचन आयोग के निर्देशों का पालन करते हुए मतदाताओं के बीच पहुंचे, उनके द्वारा मतदान केन्द्र पर ही मतदान करने की इच्छा जाहिर की गई, इसकी पावती भी है। सूची में तीन बुजुर्ग मतदाता 85 प्लस के थे, उनमें एक का निधन हो चुका है।

- धर्मराज गढ़ेकर, बीएलओ सर्ग

होशंगाबाद की हलचल

संजीव डेसाय

क्या होती है आचार संहिता..

कहा जाता है कि सरकारी तंत्र में आचार संहिता एक पावर होता है इसमें नेतागिरी नहीं होती है, चुनाव के दौरान अस्त्र के रूप में सरकारी अधिकारी कर्मचारियों के हाथों में यह पावर दिया जाता है। इस पावर से ऐसे सारे सरकारी काम हो सकते हैं जो नेतागिरी के कारण नहीं हो पा रहे थे लेकिन यह अधिकारी की इच्छा शक्ति पर यह निर्भर करता है उसका कैसे उपयोग करें या नहीं करें... लेकिन यह भी हाथी के दांत है, भला पानी में रहकर भला मगरमच्छों से कौन बैर लेगा यह एक सोचने समझने का विषय होता है।

शिक्षा की दुकान, मोटी कमाई का रास्ता..

नया शिक्षा सत्र शुरू होकर भी बंद हो गया एडमिशन हो गया, कॉपी किताबें खरीद ली गईं। निजी स्कूलों की रणनीति के तहत बस अब उसके लुट की सिर्फ चर्चाएँ ही रह गईं। किताबें स्कूल की मर्जी, फीस स्कूल की मर्जी, ड्रेस स्कूल की मर्जी, शिक्षकों को वेतन स्कूल की मर्जी, स्कूल में छुट्टियां स्कूल की मर्जी, शिक्षकों का पी एफ स्कूल की मर्जी... सबसे जोरदार बात इसमें यह है कि सीबीएसई और आईपीएस मान्यता में शिक्षा विभाग कुछ भी नहीं कर सकता। इस पूरी दुकानदारी में यदि किसी का कुछ जाता है तो वह जनता की जेब से जा रहा है।

रेत माफियाओं पर सख्ती या फिर ढील..?

रेत चोरी कोई अब नई बात नहीं पर जिस तरह से रेत चोरी हो रही है वह समझ से परे है। कभी बहुत सख्ती होती है तो कभी बेखौफ सड़क पर ट्राली और डम्पर दिखाई देने लगते हैं। कृषि कार्यों के लिए बनाई गई ट्रैक्टर ट्रॉली का इसमें सही उपयोग होता है। प्रदेश में आचार संहिता जरूर लगी है लेकिन रेत के व्यापारियों में इसे लेकर कोई खौफ नहीं, खुले आम पुलिस और जिला प्रशासन को मुंह चिढ़ाते ये अवैध कारोबारी उनके सामने से निकल जाते हैं जिन में रेत भारी होती है। कौन से नियम के तहत नगर की सड़कों पर ये दौड़ते है यह उन्हें संरक्षण देने वाले ही बता सकते हैं।

ऑडिटोरियम निर्माण की कहानी का आधार फिर तो जालसाजी ही होगी..?

मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने बजरिया स्कूल का दौरा कर वहां ऑडिटोरियम निर्माण शीघ्र प्रारंभ करने की बात कहकर सनसनी फैला दी, अब सवाल यह है कि शिक्षाविद पंडित रामलाल शर्मा स्कूल तो पूरी तरह नगरपालिका स्वामित्व की जमीन पर अतिक्रमण कर चलाया जा रहा, फिर नियमानुसार नगरपालिका की इस जमीन का ना तो विधिवत सीमांकन है, और तो और अतिक्रमण कर्ता द्वारा फंसाया गया जालसाजी वाले दस्तावेजों के आधार पर जमीन खरीदी फरोख्त वाले कागजों के कारण वैधानिक रूप में नजूल शीट नं 43 प्लॉट नंबर 15/1 सरकारी दस्तावेजों में लीज नवीनीकृत भी नहीं.. सरकारी दस्तावेज में इस नंबर वाले प्लॉट के आगे का पन्ना फट गया का रिमांक.. ऐसे में क्या ऑडिटोरियम निर्माण की कहानी का आधार जालसाजी रहेगी...???

और अब चलते चलते...

अचानक सभी होर्डिंग हट गए...!

नगरपालिका के एक नेताजी के जन्मदिन का जलसा उनकी मित्रमंडली ने मनाया, कलेक्टर बंगले के आगे बिजली के खंभों का उपयोग कर लगाएं गए दूर तक बड़े बड़े होर्डिंग्स मानों आचार संहिता के दौरान प्रशासन को मुंह चढ़ाना हो, हालांकि यहां चुनाव सम्पन्न हो चुके फिर भी आचार संहिता लागू तो है। शायद कारण यही रहा हो संबंधित बड़े नेताओं की तस्वीर के साथ लगी नेताजी की तस्वीर वाले होर्डिंग दूसरे दिन ऐसे गायब मिले जैसे गधे के...

एडीपीओ की परीक्षा में फरीन खान ने 78 वीं रैंक प्राप्त की



सुबह सवरे सोहागपुर। मप्र लोक सेवा आयोग के तत्वावधान में आयोजित सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी परीक्षा 2021 का परीक्षा परिणाम हाल ही में घोषित हुआ। जिसमें सोहागपुर एडीपीओ अनोशा खान की भतीजी फरीन खान ने पहले ही प्रयास में 78 वीं रैंक हासिल करके परीक्षा उत्तीर्ण की। उल्लेखनीय है कि 2021 में सागर विश्वविद्यालय से एलएलबी की परीक्षा उत्तीर्ण हुई थी। इस उपलब्धि पर खान परिवार में प्रसन्नता का माहौल बना गया है। फरीन खान की इस उपलब्धि पर सभी शुभचिंतकों एवं परिजनों ने शुभकामनाएं दी हैं।

समीपवर्ती ग्राम ईश्वरपुर में स्वामी विवेकानंद की मूर्ति का अनावरण 12मई को

सुबह सवरे सोहागपुर ।

समीपवर्ती ग्राम ईश्वरपुर के शंकर-विवेकानंद संन्यास आश्रम पलकमति - माँ नर्मदा संगम पर जगदुरु आदि शंकराचार्य एवं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण 12मई को आयोजित किया गया है।श्री शंकर-विवेकानंद संन्यास आश्रम एवं स्वामी विवेकानंद भावधारा सेवा समिति के स्वामी ईशानद ने बताया कि शंकर विवेकानंद संन्यास आश्रम में जगदुरु आदि शंकराचार्य एवं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण भावधारा पर आधारित पूजन की तिथि (12 मई 2024, वैशाख शुक्ल 5) को सम्पन्न होगा। इसके पूर्व 11 मई दिन शनिवार प्रातः 8 बजे से अखंड रामचरितमानस पाठ एवं 12 मई दिन रविवार प्रातः 8 बजे से अखंड रामचरितमानस पाठ का समापन होगा। इसी तारतम्य में पूजन, रुद्राभिषेक ,प्रतिभा सम्मान समारोह , कन्या पूजन के अंत में प्रसादी भंडारे का आयोजन किया गया है। शंकर-विवेकानंद संन्यास आश्रम भावधारा सेवा समिति सोहागपुर ने नागरिकों से कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

जिला न्यायालय में रक्तदान शिविर आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिला न्यायालय में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री सतीश चंद्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर अनेक जज एवं वरिष्ठ अधिवक्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश श्री सतीश चंद्र शर्मा ने कहा कि रक्तदान महान दान है । रक्तदान से अनेक गंभीर मरीजों की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने हर स्वस्थ व्यक्ति से रक्तदान की अपील की। इस कार्यक्रम में तृतीय जिला न्यायाधीश श्री अभिलाष जैन न्यायाधीश, श्रीमती स्वप्नश्री सिंह जिला रजिस्ट्रार/न्यायाधीश अध्यक्ष अभिभाषक संघ श्री राधेश्याम यादव, सचिव श्री राजेश वर्मा, श्री जीशान खान जिला विधिक सहायता अधिकारी, अधिवक्तागण एवं अनेक पैरालीगल चालेन्टियर्स उपस्थित रहे।

तीसरी बार मोदी जी के आगमन पर ऐतिहासिक धारानगरी में उत्सवी और उल्लासी बयार...

धार लिखेगा नई ईबारत, देश और दुनिया के लोकप्रिय नेता का स्वागत करने को हर कोई आतुर...

(धार से राजेश शर्मा की खास रिपोर्ट)

बाबा धारनाथ की पावन धरा ऐतिहासिक राजा भोज की धारानगरी की बयार इन दिनों मोदीमय है.. हर कोई आतुर है एक झलक पाने को.. क्या आम क्या खास हर किसी को इंतजार है 7 मई का.. और हो भी क्यों नहीं मोदी जी तीसरी बार जो इस पावन धरा पर आ रहे हैं.. एक ही स्वर यहां की फिजाओं में गुंजायमान है राष्ट्र गौरव मोदी जी का धार की माटी से अनुराग... देश और दुनिया के पटल पर मोदी के क्रेज से भला धार के बाशिंदे कैसे अछूते रह सकते.. आलम यह है कि सबकी जुबां पर मोदी- मोदी है.. प्रचंड गर्मी की तपिश पर मालवा- निमाड़ और वनांचल वासियों की मोदीजी के प्रति दीवानगी भारी है.. बीते कई दिनों से क्या धार वरन् संपूर्ण अंचल के केंद्र मोदी और सिर्फ मोदी है.... धार की गलियों- चौपाटी और चौपाल में ना लोकसभा चुनाव की चर्चा है ना सियासी किस्से.. फिलवक्त एक ही चर्चा - एक ही गुंज मोदी - मोदी ...

पीएम मोदी के स्वागत के लिए तैयार है धार की धरा ...

पीएम मोदी के स्वागत के लिए तैयार है धार की धरा .और हो भी क्यों नहीं देश के लोकप्रिय और वैश्वक लीडर पीएम मोदी का राजा भोज की ऐतिहासिक नगरी में जो आगमन हो रहा है... क्या धार वरन् संपूर्ण अंचल में उत्सव और उल्लसनी छाटा है.. हर कोई निहारना चाहता है देश और दुनिया के लोकप्रिय नेता को.. इस ऐतिहासिक क्षण का सभी को इंतजार है... पीएम के रूप में दूसरी बार आ रहे मोदी जी के स्वागत में कोई कस्मर नहीं छोड़ना चाहते है.. लोकसभा चुनाव की बेला में पीएम का आगमन सियासी हलकों और सियासत के लिहाज से खासा मायने रखता है.... मोदी जी का आगमन संपूर्ण मालवा और निमाड़ अंचल में भाजपाइयों में नयी ऊर्जा का संचार पैदा करेगा.. और हो भी क्यों नहीं आखिर हर देशवासियों की तरह धारानगरी के बाशिंदे भी मोदीजी की एक झलक देखने के लिए बेताब जो है..



कक्षा 10वीं में फेल होने पर घर से भागी 2 छात्रा एक बुआ और दूसरी मौसी के घर गई पिपरिया, दोनों बेस्ट फ्रेंड

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम में एमपी बोर्ड की कक्षा दसवीं में फेल और सप्लीमेंट्री आने पर 2 नाबालिंग छात्रा घर से भागकर भोपाल और पिपरिया पहुंच गईं। दोनों छात्रा बेस्ट फ्रेंड हैं। परीक्षा में एक फेल हुई और दूसरी को 2 विषय में सप्लीमेंट्री आई। रिजल्ट के बाद दोनों को उनके माता पिता ने डांटा। जिससे नाराज होकर दोनों घर से चुपचाप निकल गईं। जिन्हें पथरीटा पुलिस ने साइबर की मदद से खोजबीन कर ढूंढ निकाला। एक छात्रा को भोपाल बुआ और दूसरी को पिपरिया से मौसी के घर से खोजा। दोनों को भोपाल से लाने के बाद उनके बयान हुए। घर से जाने का कारण पूछा एक ने बताया कि मैं दसवीं में फेल हुई। जिस पर पिता ने डांटा था। दूसरी ने भी कहा कि 2 विषय में सप्लीमेंट्री आने पर मम्मी-पापा ने चिढ़ाया था। पथरीटा थाना प्रभारी संजीव पंवार ने बताया दोनों छात्राएं 30 अप्रैल को घर से लापता हुईं। परिजन ने गुमशुदगी दर्ज कराई। दोनों नाबालिकों को खोजने के लिये एक टीम बनाई। जिसमें एएसआई रेखा मुनिया को जिम्मेदारी सौंपी गई। परिजन और रिश्तेदारों से संपर्क किया। जिससे एक का भोपाल और दूसरी का पिपरिया में मौसी के घर होने की जानकारी मिली। एएसआई ने अपनी टीम के साथ दोनों नाबालिक छात्राओं को भोपाल एवं पिपरिया से बरामद कर लिया।

नीट परीक्षा के लिए कड़ी तलाशी से गुजरे परीक्षार्थी : छात्राओं के एरिंग्स, हेयरपिन, लॉग, अंगुठी उतरवाई, हाथ-पैर में बंधे धागे काटे, 53 परीक्षार्थी रहे अब्सेंट



नर्मदापुरम (निप्र)। नेशनल टैस्टिंग एजेंसी की ओर से देश की सबसे बड़ी मेडिकल परीक्षा नीट यूजी आज रविवार को हुई। दोपहर 2 से 5.30 बजे तक शहर के तीन केन्द्र शांतिनिकेतन कॉन्वेंट स्कूल, सरवाइट स्कूल और सेमीरिटन हाई सेकेंडरी स्कूल में आयोजित हुई। तीनों केन्द्रों पर 1291 में से 1238 विद्यार्थियों ने नीट की एन्जाम दी। शहर सहित पिपरिया, केसला, सुकतवा,इटारसी, सहित आसपास के गांव से विद्यार्थी परीक्षा देने आए। परीक्षा देने पहुंचे परीक्षार्थियों को कड़ी तलाशी से गुजरना पड़ा। परीक्षा सेंटरस पर छात्र-छात्राओं से जुते, एरिंग्स, नाक की बाली, हेयरपिन लिए गए। हाथ-पैर में बंधे धागे काटे गए। ऐसे में कुछ छात्राओं को नाक लॉग, एरिंग्स उतरवाने के लिए सुनार की दुकान तक जाना पड़ा।

स्वास्थ्य विभाग ने जारी की हीट स्ट्रोक एडवाइजरी स्वास्थ्य संस्थाओं में उपलब्ध हैं लू के उपचार की सभी व्यवस्थाएं

सीहोर(निप्र)।तापमान में बढ़ोतरी को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग द्वारा हीट स्ट्रोक से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। साथ ही जिला अस्पताल से लेकर उपस्वास्थ्य केंद्र तक की संस्थाओं को लू के प्रकरणों के उपचार के लिए अलर्ट पर रहने के निर्देश जारी किए गए हैं। हीट स्ट्रोक के प्रारंभिक प्रबंधन के लिए सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में ओआरएस कॉनर बनाए गए हैं। उल्टी, दस्त, बुखार के प्रबंधन और

उपचार के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं स्वास्थ्य केंद्रों में सुनिश्चित की गई हैं।

गंभीर और घातक हो सकता है हीट स्ट्रोक : हीट स्ट्रोक होने पर शरीर का तापमान 104 डिग्री फारेनहाइट तक पहुंच जाता है। यह स्थिति धीरे-धीरे हो सकती है या एकाएक भी आ सकती है। जटिल अवस्था होने पर किडनी काम करना बंद कर सकती है। लू लगने पर अगर तुरंत उपचार

न किया जाए तो व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर और उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना।

लक्षणों की जल्द पहचान करके बीमारी की गंभीरता को किया जा सकता है कम :

